मूल्य रु।.५-००

सलंग अंक ८६ जून-२०१४

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

बालवा में छठी बालयुवा सत्संग शिबिर

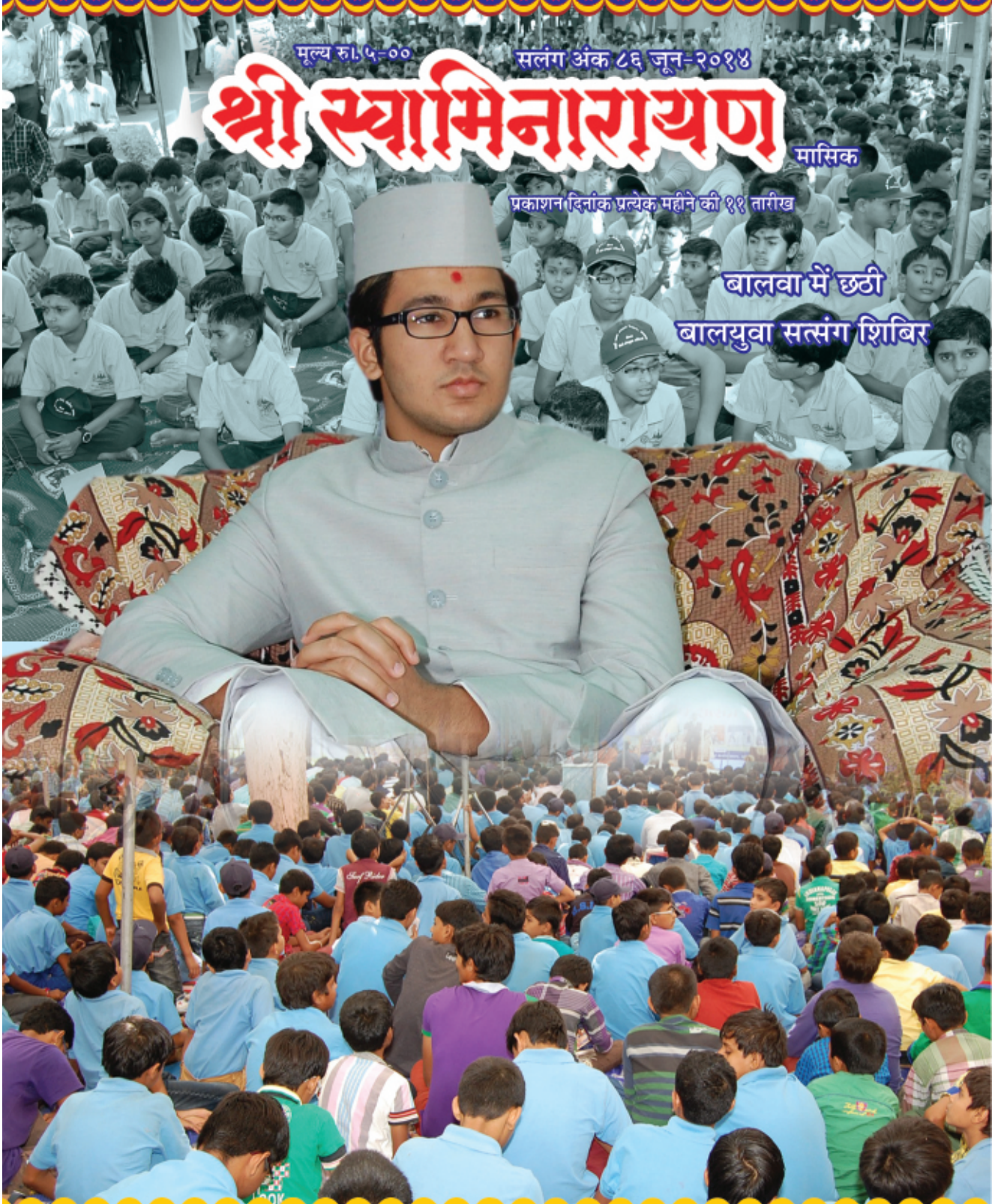

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में मलाड मुंबई की महिला मंडल द्वारा आयोजित पारायण प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव के अन्नकूट की आरती उतारते हुए तथा सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री तथा यजमान परिवार प.पू. बड़े महाराजश्री की आरती उतारते हुए तथा प्रासंगिक उद्‌बोधन करते हुए पू. महंत स्वामी । (२) कलिवलेन्ड मंदिर में छठे पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. महाराजश्री ।(३) जेक्शन मीसीसीपी अमेरिका सत्संग सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री । (४) सीडनी मंदिर में ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए पू. निर्गुण स्वामी तथा समूह में आरती उतारते हुए यजमान परिवार ।(५) ओकलेन्ड की अपनी डॉ. अंजनाबहन कांतिभाई पटेल को बिजनेसवुमन आफ ध इयर (QSM) एवोर्ड प्राप्त हुआ उस समय के प्रसंग की तसवीर ।(६) विराटनगर मंदिर में (बहनो के) पाटोत्सव प्रसंग पर आरती उतारते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री । (७) कलोल नव निर्माण मंदिर का निरीक्षण करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - ८ ● अंक : ८६
जून-२०१४

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	सुवासिनी भाभी	६
०४.	भगवान के अर्चास्वरुप का माहात्म्य	८
०५.	प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वचन में से	१०
०६.	प्रसादी के पत्रों का आचमन	११
०७.	छठी बाल सत्संग शिबिर	१७
०८.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१८
०९.	सत्संग बालवाटिका	२०
१०.	भक्ति सुधा	२१
११.	सत्संग समाचार	२३

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● वंशपारंपरिक देश में ५०१-०० ● विदेश १०,०००-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

असह्य गर्मी चल रही है। अपने गुजरात में अमुक विस्तार में खूब गर्मी पड रही है। इडर तथा सुरेन्द्रनगर एवं दक्षिण गुजरात में इतनी गरमी का अनुभव नहीं होता था । इसका कारण यह है कि जितना प्रदूषण फैलेगा उतना ही खराब परिणाम देखने को मिलेगा । वृक्षों के जंगल को काटकर मानव सीमेन्ट का जंगल बना दिया है। गीर के सिंहोको अपने विस्तार से छोड़कर निकलना पड़ता है । प्रकृति ने प्राणियों के लिये जो स्थान निश्चित किया हो उसी स्थान पर मनुष्य रहने जाय तो वहाँ के प्राणी क्या करेंगे, अन्यत्र स्थान तो खोजेंगे ही । वृक्ष जितना अधिक लगायेंगे और उनकी रक्षा करेंगे तो पांच-दशवर्ष में ही चारो तरफ हरियाली की क्रांति दिखाई देगी । जहाँ पर अधिक वृक्ष होंगे वहीं पर अधिक बरसात होगी । अपने प.पू. बड़े महाराजश्री प्रति वर्ष वरसात के समय श्री स्वामिनारयण बाग में तथा श्री स्वामिनारायण म्युजियम में एवं आंबली के निवास स्थान में अनेको वृक्ष लगवाते हैं, उनकी रक्षा की व्यवस्था भी करते हैं। लंबे प्रवास में गये हों और जब आकर उनको सूखा या गिरा देखते हैं तो बहुत दु:खी होते हैं। इसलिये सभी हरिभक्त महाराज के जीवन में से प्रेरणा लेकर इस वर्षा की ऋतु में कम से कम एक वृक्ष लगाने का तथा उसके रख रखाव का विशेष नियम लीजियेगा। इससे अपने इष्टदेव तथा धर्मकुल की प्रसन्नता मिलेगी।

श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव की जोरदार तैयारी चल रही है, इसका स्थल निश्चित हो गया है। जिसका इस अंक में उल्लेख हैं। इससे पूर्व प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४२ वाँ प्रागट्योत्सव भी धूमधाम से मनाया जायेगा।

ऐसे उत्सवों का दर्शन चाहे जितना बड़ा पापी हो उसे अन्तिम समय में उस दर्शन की याद आजाय तो निश्चित ही उसका कल्याण हो जायेगा। हम लोग तो श्रीहरि के आश्रित तो हैं ही इसलिये हमलोगों का कल्याण तो होगा ही।

श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव में आप सभी तन, मन, धन की सेवा करके महोत्सव की सफलता में सह भागी बनेंगे ऐसा हमारा सभी हरिभक्तों से नम्र अनुरोधहै।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२०१४)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर मकनसर (मूली देश) पदार्पण।

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

३-४ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) ठाकुरजी के पाटोत्सव-महाभिषेक अपने वरद् हाथों धूमधाम से संपन्न किये।

५ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में मलाड-मुंबई सत्संगी महिला मंडल आयोजित पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर जूना घाटीला (मूली देश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर महिला वासणा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
सायंकाल-रापर भुज (कच्छ) रतनपर गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण।

८-९ रतनपर (कच्छ) शोभायात्रा में पधारे। दोपहर श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपर (कच्छ) पदार्पण।

११ नेत्रामली गाँव में (ईडर देश) प.भ. डी.के. पटेल के यहाँ पदार्पण।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर भात पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१३ विहार गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण। सायंकाल पदार्पण वहाँ से जीरागढ (हालार) पदार्पण।

१५ जीरागढ हालार मूली देश) पदार्पण।

१६ खोलडीयाद (मूली देश) गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका पाटोत्सव प्रसंग पर आयोजित कथा प्रसंग पर पदार्पण।
सायंकाल - श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी बापुनगर पाटोत्सव प्रसंग पर आयोजित कथा प्रसंग पर पदार्पण।

१८-१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर (पुराना) भुज (कच्छ) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर धमीज पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२१ मेई से ७ जून २०१४ तक विदेश धर्मयात्रा श्री स्वामिनारायण मंदिर न्युजर्सी विहोकन तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर कलिवलेन्ड के पाटोत्सव प्रसंग पर तथा सत्संग प्रचारार्थ पदार्पण।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२०१४)

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल ठाकुरजी के पाटोत्सव अभिषेक प्रसंग पर पदार्पण।

८-९ बालवा (उनावा) गाँव में सत्संग युवा शिबिर अपनी अध्यक्षता में संपन्न किये।

१७ प्रातः श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी बापुनगर महापूजा प्रसंग पर पदार्पण।
श्री स्वामिनारायण मंदिर सायरा (मोडासा) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका ठाकुरजी के पाटोत्सव अभिषेक अपने वरद हाथों से संपन्न किये।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमनगर पदार्पण।
सायंकाल श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणघाट सत्संग सभा प्रसंग में पदार्पण।

२८ से २ जून तक सर्वोपरिधाम छपैया तथा अयोध्या दर्शनार्थ पदार्पण।

सुवासिनी भाभी

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

कौशलदेश के मध्य में आये छपिया धाम से पश्चिम में ४० किलो मीटर दूरी पर तरगाँव नामका गाँव आया हुआ है। वहाँ सरयूपारिण उत्तम वर्ण के ब्राह्मण है। वहाँ मुनि अवटंक दुबे के नामसे प्रसिद्ध बलधिराम दुबे नाम का ब्राह्मण उसकी धर्म पत्नी उदयबा का पवित्र परिवार रहता है। बलधिराम दुबे से उदयकुंवर में रेवती देवी के अंश से गर्भ रहा था। उदयमाता खूब शोभायमान हो गयीं। विक्रम संवत १८२१ को आश्विन शुक्ल द्वितीया, पूरवा नक्षत्र में, शायंकाल को पुत्री का जन्म हुआ। माता-पिताने जातकर्म संस्कार कर विविधप्रकार के दान, जप, यज्ञ और तर्पणादि कर्म किया था। पश्चात् उस पुत्री का नाम 'सुवासीनी' रखा गया। बलधिराम दुबे के परिवार में तीन पुत्र औ दो पुत्री हुई । लक्ष्मीराम और भवानीदिन तथत्प्रथिपाल दुबे पुत्र थे और गेंदा तथा सुवासीनी नामकी पुत्री हुई। परिवार में सुवासिनी छोटी पुत्री थी इसलिए पिता के सबसे करीब थी। जैसे ही सुवासिनी का जन्म हुआ परिवार की यश कीर्ति खूब बढ गई। गाँव में सभी कहते सुवासिनी के लिए बडे घर का रिश्ता आयेगा । छपियापुर के तिवारी परिवार में तरगाँव की बहुत सी लड़कियों का ब्याह हुआ था। इस प्रकार दोनो परिवार बहुत करीब से जानते थे। धर्मदेव के बड़े पुत्र रामजीप्रताप जो कि अनंत के अंश थे जिनका विवाह संवत १८४१ माधकृष्ण पंचमी रविवार को वेदोक्त विधिपूर्वक संबंधियो की उपस्थिति में संपन्न हुई है। इस समय बलधिराम तथा उदयकुवरबा ने अपनी पुत्री को बिदा किया और साथ में रथ, घोडा, सेवक, दास-दासियों को भेजा। बलधिराम के बड़े भाई लक्ष्मण दुबे ने यथाशक्ति रामप्रताप का स्वागत किया था। विवाह के समय घनश्याम महाराज ४ वर्ष के थे।

रामप्रताप - सुवासिनी का घर नियम-भक्ति से भरापुरा था इसलिये धर्मदेव भक्तिमाता को माता-पिता मानकर पुत्र बधु होने के नाते पुत्री जैसा प्रेम मिला। इसके अलांवा सुवासिनी का संबन्धरामप्रतापजी के साथ हुआ घर आने के बाद ५ वर्ष के घनश्याम के साथ मनजुड गया। सुवासिनी के आगमन से भक्तिमाता की सेवा घनश्याम महाराज लेना बन्द कर दिये अब वे सुवासिनी भाभी की सेवा स्वीकार करते थे। महाप्रभु का संकल्प वे पहले से जान लेती थी, इस लिये भोजन, पानी, वस्त्र अथवा इच्छित वस्तु अन्हे समय से पहले यशोदामां जिस तरह श्रीकृष्ण के लिये करती थी उसी तरह सुवासिनी भाभी करती थी। इस तरह सेवा करते रहने से घनश्याम महाराज उनके वश में हो गये । घनश्याम महाराज की सेवा को ही पूजा पाठ मानकर अन्य कार्य में मन को नहीं लगाई । भक्ति माता तथा जेतलपुर की गंगा मा के प्रेम की तरह शब्दों में जिसका वर्णन संभव नही है इस तरह सुवासिनी भाभी ने प्रभु के प्रति अपना अगाधप्रेम किया । कवि-लेखक तो मात्र अल्पकल्पना करके ही अन्तुष्ट हो जाते हैं। लेकिन उससे कहीं अधिक प्रेम सुवासिनी भाभी का और प्रभु का था। वे प्रतिदिन प्रार्थना करती किं मुझे सन्तान की प्राप्ति न हो. मैं ''घनस्याम'' को अपना पुत्र मानकर अपना जीवन सवार लूंगी । यह विन्ती घनश्याम प्रभु को अनुकूल नहीं थी । क्योंकि संप्रदाय की धर्मधुरा सुवासिनी भाभी के पुत्र को सौंपना अक्षरधाम सेनिश्चित हो चुका था।

किसी अवसर पर तरगाँव मायके में सुवासिनी भाभी को जाना हो गया, तो घनश्याम प्रभु का विरह सहन नही हो सका। एक-दो दिन रहकर वे वापस आगयी। बाद में भी जब उन्हें जाना होता तो वे घनश्याम प्रभु को साथ लेकर जाती थी । भगवान तथा भाभी के साथ का अनंत दृष्टांत शास्त्रों में लिखा मिलता है। उनमें से कुछ दृष्टांत के रुप में यहाँ लिख रहे हैं -

भगवान का नाम करण संस्कार मार्कण्डेय मुनिने किया। उस नाम में भाभी को बहुत ऋचि नहीं थी। भाभी ने उनका नाम घनश्याम रखा था। वे घनश्याम कह कर बुलाती थीं । इसके बाद छपैयावासी लोग भी घनश्याम कहकर ही पुकारते थे। भगवान, मिश्री, पेंडा, बतासा, दूधइत्यादि बड़े आग्रह के साथ भाभी खिलाती थी।

कभी-कभी प्रभु नाराज हो जाते तो भाभी स्वयं अपने हाथों से खिलाने लगती। भाभी की आत्मा परमात्मा के साथ जुड़ गयी थी । इस लिये अनुकूल-प्रतिकूल, प्रिय-अप्रिय, हर्ष, शोक, प्रसन्नता, उदासीनता सबकुछ भाभी को पूर्व में ख्याल आजाता था। फिर भी उनके मन में लेश मात्र अभाव नहीं आता था। कितनी बातें भाभी की वे नहीं मानते तो भी वे उन्हें मना लेती थी।

यह धर्म दादा का परिवार है। धर्म के संबन्धी भागवत में - सत्य, दया, तप, वैराग्य, शौच, संतोष, ज्ञान, सहनशीलता, पवित्रता, विवेक, संस्कार, इत्यादि वर्णित हैं - यह सब धर्म देव के घर में था। ऐसे घरों में प्रभु रहते हैं।

एकवार गोमतीगाय का दूधघनश्याम को पिलाने के लिये मना कर दीं तो गाय दूधदेना ही बन्द करदी । जब भूल समझ में आगयी तब दूधपिलाई और गाय दूधदेने लगी ।

अयोध्या में एकबार घनश्याम प्रभुने भाभी से भोजन मांगा । भाभी ने कहा अभी तैयार करके देती हूँ । उन्हों ने कहा कि तो पेड़ा दे दीजिये । भाभीने कहा कि ऐसी कन्या के साथ विवाह करना जो पेडां देने वाली हो । विवाह के विना नित्य पेंडा खायेंगे. भाभी का पल्लू पकडकर ऐसा जब वे बोले तो भाभी हंसने लगी । अब वे रसोई बनाने में व्यस्त होगयी । इतने में डिब्बी में से भाभी की भगवान जितनी प्रिय अंगुठी को लेजाकर हलुवायी की दुकान में गिरवी रखकर मित्रों के साथ मिठाई खाकर घर आये और सो गये । प्रसंग का सारांश यह कि प्रभु हलुवाई के पास जाकर मिठाई पूरी दुकान की खाने की शर्त करके अंगुठी वापस ले आये । इसके बाद भाभी अंगुठी की चर्चा करना बन्द कर दीं । अब वे चर्चा मात्र घनश्याम प्रभु की ही करती रहती थी ।

भाभी के आने के बाद प्रभु का चौल संस्कार, यज्ञोपवीत संस्कार इत्यादि जो भी संस्कार हुये उन सभी संस्कारो में सुवासिनी भाभी ने प्रभु को इस तरह सजाया कि लोग देखते रहे । आनेवाले से परिचय कराना हो या उन्हें बाहर जाना हो वे भाभी से पूछे विना बाहर पैर भी नहीं रखते थे । प्रभु को भूख लगती तो भाभी को पूर्व आभास हो जाता था ।

श्रीहरि जब वन में पधारे तब विरह की वेदना सहन नहीं हुई तो प्रभु उन्हें प्रतिदिन दर्शन देते थे इसके बाद दिव्य रुप से भोजन करते बाद में ही भाभी भोजन करती थी ।

संवत् १८७७ में अयोध्यावासी लोया गाँव में आये, उसमें प्रभु को शाग बनाते देखकर भाभीने कहा कि वापस हमारे घर आजाइये, ऐसा श्रम क्यों करते हों, मे झूलेपर बैठाकर भोजन कराऊँगी । श्रीहरि के साथ धर्मकुल जब तक था तबत क प्रभु भोजन के लिये उन लोगों के पास जाते थे । सुवासिनी भाभी का स्वादिष्ट भोजन देखर मूलजी ब्रह्मचारी भी भगवान को वैसा भोजन बनाकर खिलाते थे । तब श्रीहरि कहते कि इसमें भाभी के रसोई की तरह स्वाद आ रहा है । इस तरह कहकर याद करते थे ।

अयोध्या में एकबार भाभी प्रभु का चरण धो रही थी तो उनके चरण में राजोचित चिन्ह देखकर कहीं कि आपके चरण के चिन्ह को देखकर ऐशा होता है कि आप चक्रवर्ती राजा होंगे । महाराजने कहा कि हमें जो सत्ता, सुख मिलेगा वह सब आपके पुत्र को दे दूंगा । इस तरह का उन्हें वचन दे दिये । यह सुनकर भाभी खूब हंसी । यह वचन देकर श्रीहरिने अपने वचन को सत्य किया । धर्मवंशी ही इस गादी के अधिकारी हैं ।

श्रीहरि के स्वधाम पधारने के बाद सद्गुरु ब्रह्मानंद स्वामी मूली मंदिर का अवशिष्ट काम करवा रहे थे उस समय काम करने वालों को उनका वेतन देने भर को पैसे नहीं थे इसलिये स्वामीने काम बन्द करवा दिया । यह सुनकर सुवासिनी भाभीने अपन शरीर के आभूषण देकर सभी के वेतन को दिलवाया । लेकिन स्वामीने वे आभूषण मंदिर में प्रसादी के रुप में रखलिया, जिससे वहाँ की उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगी और सारे आर्थिक संकट दूर हो गये । सुवासिनी भाभी के जीवन में प्रभु के सिवाय कुछ भी प्रिय नहीं था ।

भाभी का शेषजीवन मूली मंदिर में वीता । महाराज के स्वधाम पधारने के बाद श्रीहरि को प्रत्यक्ष भोजन कराती थी । सुवासिनी भाभी की अक्षरवास सं. १८९८ श्रावण शुक्ल एकादशी को मूली में हुआ था । सुवासिनी भाभी का वह अलंकार आज भी मूली मंदिर की तिजोरी में है । अक्षरवास के समय ७७ वर्ष की उम्र थी । रामप्रतापजी के १ वर्ष पूर्व अक्षरवास हुआ था ।

क्या आपलोग दशांश-विशांश देव को अर्पण करते हैं ?

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान ने हम सभी के लिये शिक्षापत्री में १४७ वें श्लोक में दशांश-विशांश देव को अर्पण करने के लिये स्पष्ट आज्ञा की है । इस लोकमें सरकार ने भी इन्कमटेक्स लेती है । यह तो सभी लोग जानते हैं और भरते भी हैं । इसी तरह हम सभी के भौतिक सुख के लिये तथा आध्यात्मिक सुख के लिये दशांश-विशांश देवता के निमित्त श्री नरनारायणदेव देश में रहनेवाले सभी छोटे-बड़े हरिभक्त अपनी कमाई में से दशवां-वीशवां भाग अपने इष्टदेव श्री नरनारायणदेव मंदिर कालुपुर - अमदावाद की आफीस में नगदरुपये - अन्न या अन्य वस्तु भेंट देकर पक्की रसीद अवश्य ले लें । अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का भी सभी को विशेष अनुरोधहै कि सत्संगी मात्र अपनी इन्कम में से दशवां-वीशवां भाग अवश्य देव को अर्पण करें ।

महंत शा.
स्वामी हरिकृष्णदासजी कालुपुर, अमदावाद

भगवान के अर्चास्वरुप का माहात्म्य

- शा. निर्गुण स्वामी (अमदावाद मंदिर - संचालक : सहजानंद गुरुकुल असारवा)

साकार परमेश्वर के स्वरुप की उपासना करते हुए अपने भक्तों की अर्थ सिद्धि के लिये स्वयं परमात्मा ने अपने दिव्य स्वरुप की पहचान अपने सत् शास्त्रो द्वारा जगत के जीवमात्र को समझमें आये ऐसा समझाया है । जिसका विभाग इस तरह हैं - प्रथम यह कि परब्रह्म परमात्मा भगवान श्री पुरुषोत्तम नारायण ही, पर - व्यूह - विभव तथा अर्चा स्वरुप से जीव के आत्यन्तिक कल्याण के लिये दर्शन देते हैं । यह आगम इत्यादि शास्त्रों में वर्णत है -

मम प्रकाराः पंचेति प्राहुर्वेदपारगाः ।
परो व्यूहश्च विभवो नियन्ता सर्वदेहिनाम् ॥
अर्चावतारश्य तथा दयालुः पुरुषाकृतिः ।
इत्येते पंचधा प्राहुः मां रहस्यविदो जनाः ॥

जीव के ऊपर दया करके मनुष्य अवतार धारण करते हैं । इसी तरह परमात्मा अर्चास्वरुप में (मूर्ति स्वरुप में) भी जीवों पर दया करके प्रत्यक्ष विराजमान रहते हैं । अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने भी वचनामृत में बहुत स्पष्ट कहा है कि इन मूर्तियों को कोई धातु या पत्थर की नमाने इस में तो साक्षात् परमात्मा प्रत्यक्ष रुप से विराजमान हैं । यह समझकर दर्शन, सेवा करेंगे तो प्रत्यक्ष सेवा का फल मिलेगा । अर्थात् शास्त्र के प्रमाणानुसार प्रतिष्ठित मूर्ति में मनुष्याकृति स्वरुप प्रत्यक्ष विराजमान रहती है । विशेष रुप से अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति ऐसे परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण ने स्वयं जिस मूर्ति की प्रतिष्ठा की हो अथवा उन्हीं के अपर स्वरुप धर्मकुलोत्पन्न पीठाधिपति प.पू. महाराजश्री जिस मूर्ति की प्रतिष्ठा की हो उसमें सदा भगवान प्रत्यक्ष विराजमान रहते हैं । इस दिव्य भावना के साथ प्रत्यक्ष विराजमान मूर्ति को वस्त्रादि अलंकार धारण कराते हैं । इसके अलांवा विविधपक्वान्न-भोजन इत्यादि भोग में रखते हैं । पूजा करते हैं । दंडवत प्रणाम करते हैं ।

ऐसे अनेंको प्रतिष्ठित मूर्तियों को जो श्रद्धा का एकमात्र स्थान है अर्चास्वरुप कहते हैं । उन मूर्तियों को कोई प्रमाद वश आज के टेकन्लोजी के युग में किसी चीज का उपयोग करके चलने फिरने वाली या इंगित करने वाली बनादे तो उसे भगवान के साथ द्रोह कहा जायेगा । ऐसी क्रिया करने वालों को कभी प्रोत्साहन भी नही देना चाहिए । ऐसा यदि कोई करता है तो उसके ऊपर कानूनी व्यवस्था की जा सकती है । टेकनोलोजी का उपयोग करके पुतले का एनिमेशन लोग करते हैं । लेकिन किसी के फोटो में एनिमेसन द्वारा भी विकृति नहीं की जासकती । जब कि भगवान की मूर्ति तो साक्षात् भगवान है । ऐसी मूर्ति में भगवान साक्षात् बिराजमान रहते हैं । मोबाईल या फोटो ग्राफी द्वारा क्लिप करके अज्ञानी लोगों द्वारा इतस्ततः बाजारी करण देखकर प.पू. बड़े महाराजश्री बहुत नाराज होते हैं । इसलिये सावधान होकर भगवान को प्रसन्न करने वालों को चाहिये कि ऐसै लोगों को क्षमा न करें । और करवाभी नहीं चाहिये ।

भगवानश्री स्वामिनारायण ने स्वयं अपने वाङ्डमय स्वरुप शिक्षापत्री में अर्चास्वरुप अर्थात् मूर्ति की नित्य पूजा करने की वात की है । आठ प्रकार की मूर्ति पूजा करने योग्य है । शैली दारुमयी लौही लेप्या च सैकती । मनोमयी मणिमयी प्रतिमाऽष्टविधा स्मृता ॥ इस तरह भगवान वेदव्यासने कहा है । शास्त्र में जो विधान किया गया हो उसके अनुसार वर्तन करने से भगवान प्रसन्न होते हैं । स्वयं के विचारानुसार वर्तन करने से भगवान की कभी प्रसन्नता नहीं मिलती । इन आठ प्रकार की मूर्तियो को पूजा में रखा जा सकता हैं । गृहस्थ को कैसी मूर्ति घर में रखनी चाहिए कैसी नहीं रखनी चाहिए इसकी स्पष्टता शतानंद मुनि स्वामीने किया है - अंगुष्ठपर्वादारभ्य वितस्ति यावदेव तु । गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शस्यते बुधैः ॥ अर्थात् गृहस्थ अपने घर में अंगुष्ट के मूल से लेकर चार अंगुल के प्रणाम जितनी मूर्ति को रख सकता है, इसके अलांवा नहीं रखना चाहिए । चित्र या फोटो रखने में कोई निषेधनहीं है । यह वात भार्गवार्चनचन्द्रिका नामक ग्रंथ में तथा भविष्योत्तर

पुराण में व्यासजी ने लिखा है । वशिष्टजीने भगवान राम से वशिष्ट स्मृति में लिखा है - नार्च्या गृहेऽशमजा मूर्तिश्चतुरंगतलतोऽधिका । न वितस्त्यधिका धातुसम्भवा श्रेय इच्छतः ॥ अर्थात् - जो गृहस्थाश्रमी धातु की अथवा पाषाण की भगवान की मूर्ति अपने घर में चार अंगुल से अधिक प्रमाण की न रखे या पूजन न करे । इससे उसका मोक्ष भी बाधित हो जायेगा । इन शास्त्रो के वचन का उल्लंघन करके कुछ भी करते हैं तो बहुत सारे दोष के भागी बनेंगे । यदि चार अंगलु से बड़ी मूर्ति हो तो उसे प्रतिदिन मिष्ठान्न के साथ पक्वान का भोग लगाना पड़ता है । प्रतिदिन स्नान कराना पडता है, पांच वार आरती करनी पडती है । गृहस्थ के घर में जब कभी अशौच आजाय तो सेवा-पूजा की समस्या रहती है । भगवान अपूज्य तो रखे नहीं जासकते दोष लगता है । आज तक जो भी पुण्य किये हों वह नष्ट हो जायेगा । इस लिये अपने स्वार्थ के लिये अथवा जबरदस्ती किसी से कराये जाने पर भी मूर्ति को अपने घर में नही रखनी चाहिए ।

कहेजाने वाले ओरिजनल फोटो का सत्य

कितने लोक भगवान श्री स्वामिनारायण का फोटो खींचकर यह वर्जनल है ऐसा दुष्प्रचार करते हैं । इस विष यमें भक्तों को जानना आवश्यक हैं । कारण यह कि जानकारी न होतो जिस किसी के फोटो का पूजन हो जायेगा, इससे शिक्षापत्री की आज्ञाका उल्लंधन हो जायेगा । आज्ञा इस प्रकार है -

कृष्णास्तदवताराश्चध्येयस्तत्प्रतिमापिच । न तु जीवानृदेवाद्या भक्त ब्रह्मविदोऽपिच ॥(शि.प.)

भगवान तथा भगवान के अवतार के स्वरुप का ध्यान-भजन करना दर्शन करना लेकिन कोई चाहे जितनाभी ब्रह्मज्ञानी हो, समर्थ हो, भक्त हो उसका ध्यान या पूजा नहीं करना । इस तरह प्रभु की आज्ञा है जो इसका पालन नहीं करते उन्हें दोष लगता है । यह सदाध्यान रखना चाहिये । वह इस लिये ध्यान देना जरुरी है कि - कुछ समय पहले किसी व्यक्ति का स्वरुप भगवान स्वामिनारायण जैसा पोषाक इत्यादि पहनाकर कुरसी पर बैठाकर फोटो खींचकर मीडिया में प्रसारित किया गया था । जो सौराष्ट्र के चुडाराणपुर गाँव के एक दंभी मनुष्य का है । जिस फोटो को कभी कुरसी पर तो कभी मंदिर की सीढी पर अपने बगल में मूर्ख शिष्यों को बैठाकर खिचाया गया है । उसका यह फोटो भगवान श्री स्वामिनारायण का ओरिजिनल केमरा से खींचा गया है । वह प्रचार करके सच्चे भक्तों को गुमराह कर रहा है । यह वात शक्य ही नही है । कारण यह कि भगवान श्री स्वामिनारायण का अन्तर्ध्यान संवत १८८६ शुक्ल-१० ता. ३० जून १८३० मंगलवार को हुआ था । दुनिया में केमेरा की शोध१६ वर्ष बाद अर्थात् इ.सन् १८४६ में जर्मन देश में हुई थी । उसके बाद ही फोटो खींचना प्रारंभ हुआ । जो आज के टेकनोलोजी के युग में अनजान कुछ है ही नहीं । जिन्हे सत्यवात जाननी हो तो वे गुगल में सर्च करके केमेरा का इतिहास जान सकते हैं । इसलिये कोई अनजान व्यक्ति इस तरह का फोटो खिंचा दिया है । उसे चाहिये कि इस तरह के फोटो को अपने घर से निकाल दे । उस फोटो को भगवान का फोटो मानकर सिंहासन पर तो नहीं रखा जा सकता है । खराब व्यक्ति का फोटो तो नहीं रखा जा सकता ।

प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से शा. निर्गुणदासजी का जयश्री स्वामिनारायण

गौरव

न्युझीलेन्ड - ओकलेन्ड के अपने अग्रणी सत्संगी प.भ. कांतिभाई पटेल की धर्मपत्नी अ.सौ. डॉ. रंजनाबहन पटेल को इन्डियन कोम्युटी के लिये उनकी अथक परिश्रम पर QSM एवोर्ड से संमानित किया है । जिस के लिये बेस्ट बिजनेस वुमन ओफ धइयर एवोर्ड प्रदान किया है।

रंजना बहन ई.टी.एच.सी. इष्ट तमाकी हेल्थ केर ग्रुप आफ कंपनी का न्युजीलेन्ड तथा ओस्ट्रेलिया के स्थापक डिरेक्टर तथा एक्झयुकिटीव सदस्य हैं । मेडीकल डेवलपमेन्ट तथा पब्लिक रिलेशन के साथ भी संपृक्त हैं।

इस अभूतपूर्व सिद्धि के लिये संप्रदाय गौरव का अनुभव कर रहा है । उनकी उत्तरोत्तर प्रगति के लिये श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वचन में से

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

छठी बाल शिबिर प्रसंग पर बालवा गांव में ता. ९-५-१४ - प्रथम तो ऐसी गरमी में आप सभी शिबिर में भाग ले रहे हैं इसके लिये आप सभी को धन्यवाद । हम सभी सत्संगी हैं । सत्संग अर्थात् क्या ? सत् ऐसे भगवान सत्पुरुष तथा सत्शास्त्रों का सेवन, इनका संग ही सत्संग है । सत्पुरुष कैसे होने चाहिये - दया, क्षमा, शांत, सरल संतोषी स्वभावका होना चाहिये तथा क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या नहीं होनी चाहिये । जो मान-अपमान, सुख-दुःख में समानस्थिति वाला, धीरजवाला हो, जो किसी के साथ वैर न रखता हो, जो निर्भय हो, अपेक्षा विना का जीवन हो, भगवान के लिये ही सारी क्रिया हो, जो भगवान की दृढ निष्ठा रखता हो, ऐसे सत्पुरुषों का, संतो का आप सभी को संग प्राप्त हुआ है । फिर भी शिबिर के दिन कितने बालक तथा संचालक दुकान पर खड़े होकर वेफर, गुटखा, थम्सअप इत्यादि खा-पी रहे थे । संत कहते हैं कि यहाँ पर सभी को लड्डू खिलाया जायेगा, तरबूज तथा आम का रस, गन्ने का रस पिलाया जायेगा । फिर भी सत्संगी के लिये जो अशोभनीय है, इस तरह आप सभी दुकान पर खड़े होकर आवाद्य-अपेय जैसे पदार्थ का आप लोग सेवन कर रहे थे । यह देखकर हमें बड़ा दुःख हुआ है । ऐसे सभी बालकों को तथा विशेषकरके संचालकों को सूचना हे कि अब आगे से ऐसे नहीं करियेगा । अपनी धारणा से अधिक बालक इस शिबिर में आये हैं । यह बहुत आनंद का विषय है । श्री नरनारायणदेव की कृपा से यह सब होता है । इसलिये हम सभी को एकमात्र श्री नरनारायणदेव का ही आश्रय रखना चाहिये ।

दूसरी बात तो यह कि भक्त बनने के साथ ही मानव बनना आवश्यक है । कारण यह कि १० माला भगवान की मूर्ति में एकाग्रता के विना अथवा भाव के विना फेरी जाय तो कोई फायदा नहीं उसकी अपेक्षा तो किसी

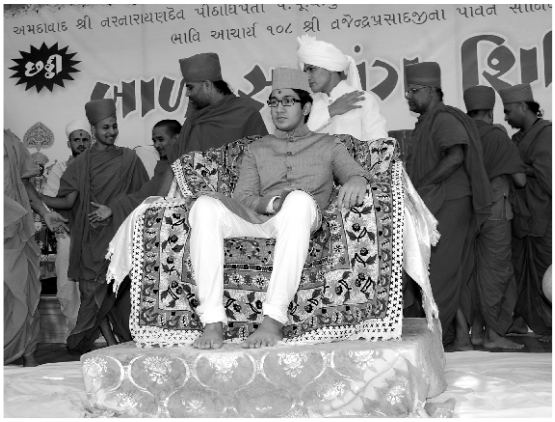

भिक्षुक को अथवा आवश्यकता के अनुकूल चाहने वाले को वह वस्तु दी जाय तो निश्चित उसका पुण्यलाभ उसे मिलेगा । भगवान भावना के भूखे हैं । इसलिये सत्संग-भक्ति को यंत्रवत् न बनाकर खूब प्रेम से भाव से करनी चाहिये, इसतरह का आशीर्वाद दिया था ।

इसके बाद प्रश्नोत्तरी के समय भी प.पू. लालजी महाराजश्री को सुनने का अवसर मिला था । एक बालक ने पूछा कि आप पढते-पढते ऐसे शिबिरों के लिये समय केसे देते हैं ? यह सुनकर लालजी महाराजश्रीने कहा कि आप लोग जिस तरह स्कूल से त्कर शिक्षक द्वारा प्राप्त होमवर्क करते हैं इसी तरह हमारे लिये सत्संग होमवर्क है । श्री नरनारायणदेव की कृपा, हमरे पू. बापूजी परिवारजनों द्वारा पाप्त संस्कार तथा संत, भक्तों द्वारा प्राप्त आशीर्वाद से हम यह सभी कार्य करते रहते हैं ।

दूसरे बालकने प्रश्न किया कि आपके पीछे यह कौन खड़ा है ? पू. लालजी महाराजश्रीने हंसते हुये कहा कि ये हमारे पार्षद है, भगत की संज्ञा से संबोधित होते हैं । आज ये हैं तो कल दूसरे भी हो सकते हैं । प्रत्येक पार्षद हमारे स्थान पर भी सेवा करते हैं । प्रश्नोत्तरी में बहुत सारे प्रश्न बालकों ने पूछा था । जिसका उत्तर संतो ने बड़ी सूझ-बूझ के साथ दिया था। सभी को संतोष हुआ था ।

प्रसादी के पत्रों का आचमन

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अमदावाद)

मूलपत्र - स्वस्ति श्रीपति लक्ष्मीपुरे महाशुभ स्थाने विराजमान उत्तमोत्तम परम पूज्यपाद धर्मवंशभूषण आचार्यप्रवर आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी हरिकृष्ण महाराज एतान श्री वरतालथी लि. साधु गोपालानंदना साष्टांग प्रणाम सहस्त्रसेवामां अंगीकार करजो । अपरंच लखवाकारण एम छे जे अमारे तो दोलोत्सव करीने तुरंत अमावाद आववानो विचार हतो । तथापि अमे आव्यमोथी डुंगरपुरथी मूर्तिमो आवी तारे आनंद स्वामी ए तथा अक्षरानंद स्वामी ए गढडे रघुवीरजी उपर कागड लख्यो तो, पछे एमनो समाचार पत्र आव्यो ने अमारे फाल्गुन वदी-११ ने दिवस वरताले मूर्ति पधरावी छे माटे गोपालानंद स्वामीने वरताले राखजो । पछे एसमाचार अमे सांभळ्या ने अमने आनंद स्वामी ए अक्षरानंद स्वामी ए घणी ताण करी ने कह्युं जे तमारे तो हवे अहीं रहेवुं जोइशे । केम के, धोलके मूर्ति पधरावे छे तेतो श्रीजी महाराजे हाथे स्पर्श करीने आवेली छे ने आ मूर्ति तो नवी छे तेनुं स्थापन करवुं छे तेमा तमारे रयुं जोइये । ने रघुवीरजीने तथा नित्यानंद स्वामीने पण अमने राख्यानी घणी ताण जणाणी ते सारु अमे अत्र रह्या छैये । ते एकादशीने दिवस प्रतिष्ठा करी द्वादशीना दिवस अत्रथी निकलसुं ते तमारे त्यां आवशुं ने जेम तमे कहेशो तेम करशुं । बीजुं भाई श्री रामप्रतापजी महाराजने मारा घणे माने प्रणाम केजो तथा सर्वज्ञानंद स्वामी आदि साधु ने अमारा नारायण केजो । संवत १८८७ ना फाल्गुन वदी-२ लेखक शुक मुनिना साष्टांग प्रणाम सेवामां कबूल करजो ॥

आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी हरिकृष्ण महाराजने पत्र पहोंचे । श्री अमदावादनो छे ।

भगवान श्री स्वामिनारायण इस पृथ्वी पर से अन्तर्ध्यान होने के ९ महीने के बाद का यह पत्र है । पत्र का हस्ताक्षर स.गु. श्री शुकानंद मुनि का है । लिखवाने वाले स.गु. श्री गोपालानंद स्वामी है तथा प.पू.ध.धु. आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री को उद्देश्य करके यह पत्र लिखवाया गया है ।

श्रीहरि जब स्वधाम गमन किये उस समय स.गु. श्री गोपालानंद स्वामी ने दोनो देशों के बड़े स्थान पर धर्मवंशी आचार्य की स्थापना करके उनकी देखभाल करने की बात की । स्वयं वे योगेश्वर ऐश्वर्य मूर्ति थे फिर भी पत्र के ऊपर से उनकी विनम्रता स्पष्ट होती है । दोनो देश के आचार्य उम्र में उनसे काफी छोटे थे । स्वयं महाराज के सब से त्यागी संतो में श्रेष्ठ स्थान वाले थे फिर भी संप्रदाय के आचार्यश्री के प्रति अनहद प्रेम -आदर रखते थे । आचार्यश्री की आज्ञा को शिरोमान्य रखते थे पत्र के आरंभ में ही प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के लिये विशेषण वाला पत्र उनकी महानता को प्रगट करता है । उत्तमोत्तम अर्थात् सर्वश्रेष्ठ उत्तम गुणों से युक्त ऐसे आचार्यश्री । स.गु. गोपालानंद स्वामी तो संस्कृत के प्रकांड पंडित थे। वे जो भी लिखते या लिखवाते वह निरर्थक नही होता था । आचार्य महाराजश्री को उन्होंने धर्मभूषम शब्द का प्रयोग किया है । धर्मवंश भूषण तथा आचार्य प्रवर इत्यादि शब्दों का प्रयोग आचार्य महाराज के लिये करते थे। आचार्यों में श्रेष्ठ उन्हें समझने की बात की गयी है । स.गु. गोपालानंद स्वामी ने यह पत्र वरताल से लिखवाया था । गोपालानंद स्वामी वडताल में ही रहे थे ।

स्वयं अवतारी पुरुष का सामर्थ्य रखते थे फिर भी पीठ पर प्रतिष्ठित आचार्यों को अपना साष्टांग प्रणाम करते और ऐसा सभी को करने के लिये कहते थे । उपरोक्त पत्र वांचने से ऐसा लगता है कि प.पू.ध.धु. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री ने धोलका मंदिर में मूर्ति की प्रतिष्ठा के लिये स.गु. श्री गोपालानंद स्वामी को आमंत्रण देकर अमदावाद बुलाया होगा लेकिन संयोगवश पत्र को संमान करने के बाद भी जिस हेतु से आना था वह कार्य स्वयं संपन्न हो गया और डुंगरपुर से जो मूर्ति आनी थी वह आ गयी । आनंदानंद स्वामीने प.पू. आचार्यश्री रघुवीरप्रसादजी महाराज को जो उस समय गढडा थे उन्हे समाचार दिया कि मूर्ति आ गयी है । अवशिष्ट जो भी भगवान श्री स्वामिनारायण ने नहीं किया था वह सभी गोपालानंद स्वामी ने महाराजकी आज्ञा के अनुसार पूर्ण करवाया ।

गोपालानंद स्वामी ने जो पत्र गढडा भेंजा था उसे प्राप्त कर पपू. रघुवीरप्रसादजी महाराज ने स्वामी को संदेश भेंजा कि जो मूर्ति आ गयी है वह व्यवस्थित रखवाइयेगा । धोलका में जो मूर्ति प्रतिष्ठित करनी है वह महाराज के हाथों से स्पर्श की गयी हैं और वह प्रसादी की है, अभी जो मूर्ति डुंगरपुर से आयी है वह नई है अतः आप वही रुकियेगा अन्यत्र कहीं जाना नहीं है।

भगवान श्री स्वामिनारायण ने जो भी मूर्ति प्रतिष्ठित किये वे सभी चमत्कार से परिपूर्ण हैं । इतना ही नही उन्होंने

जिन वस्तुओं का स्पर्श किया है वे सभी चमत्कारिक हैं । श्रीहरि द्वारा जितने भी मंदिर बने है वे सभी महाराज के प्रसादी के हैं । श्रीहरि द्वारा प्रतिष्ठित मंदिर कलियुग में मोक्ष के लिये परम साधन हैं । इन मंदिरों में दर्शन करने वाले, सेवा करने वाले सभी सुखके तथा मोक्ष के भागीदार हैं । इन मंदिरों में प्रभु साक्षात् विराजमान रहते हैं । और प्रतिदिन दर्शन एवं सेवा करने वालों को सर्व सुख प्रदान करते हैं । महाराज के जाने के बाद जहाँ भी मंदिर की प्रतिष्ठा प.पू. आचार्य महाराजश्री करते वहाँ गोपालानंद स्वामी हाथ जोडकर खड़े रहते थे ।

गोपालानंद स्वामी की प्रतिष्ठा दोनो आचार्य करते थे । बड़े संमान के साथ देखते थे । उन संत शिरोमणी के उपस्थित होने से दिव्यता का अनुभव होने लगता ।

रघुवीर महराजने नित्यानंद स्वामी को भी वडताल में रुकने के लिये कहा । स्वामीने पत्र लिखा कि यहाँ का कार्य पूर्ण करके दूसरे दिन हम वहाँ आजायेंगे । कितनी नम्रता पत्र में दृष्टि गोचर हो रही है । उन दिनों के संत पूर्ण समर्थ होते हुये भी आचार्य महाराज की आज्ञा का कभी लोप नहीं करते थे । कभी शारीरिक, आर्थिक समस्या बताकर आज्ञा टालते नहीं है । श्री गोपालानंद स्वामी को महाराजने सबसे श्रेष्ठ संत के रुप में प्रतिष्ठा की थी । उम्र में काफी अधिक थे फिर भी प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के पत्र का मान रखकर यहाँ कार्य पूर्ण करके दूसरे दिन अमदावाद पहुंच जाते हैं । इससे यह साबित होता है कि दोनो देश की समभावना स्वामी के भीतर थी, जो सभी के लिये प्रेरणारुप है ।

श्रीजीने दो देश विभाग तो केवल व्यवस्था को सुचारु रुप से संहालने के लिये ही किया था । इस में यह मेरा यह तेरा करने के उद्देश से नही किया था । इस व्यवस्था को सम्हालने में पीठाधिपति आचार्य महाराजश्रीके सहायक सभी बड़े संत तथा उत्तमचरित्रवान भक्तों को रखा गया था । जो वह परंपरा आज भी चल रही है ।

स्वामी ने मात्र इतना ही नहीं पत्र में लिखा था कि मैं आऊँगा यह भी लिखा था कि आप जैसा कहेंगे वैसा करेंगे । इतने सामर्थ्यवान संत थे कि सारंगपुर में श्री हनुमानजी का मंदिर बनाकर उसमें हनुमानजी की प्रतिष्ठा किये और हनुमानजी आज वहाँ प्रत्यक्ष बिराजमान रहते हैं । यही संप्रदाय के साधुओं का सामर्थ्य है । महाराज की आज्ञा का पालन करने में सभी नतमस्तक रहते हैं ।

कितनी सुंदर बात है दोनो देश की व्यवस्था का समन्वय रखकर दोनो देश की प्रतिष्ठा में भाग लेने के लिये आज्ञांकित होकर दासत्व भाव के साथ दोनो स्थानों पर समय से पहुंचजाते हैं और आज्ञा के अनुसार कार्य भी करते हैं ।

सभी हरिभक्तों को समझने लायक यह वात है - हमें थोडा भी धन, ऐश्वर्य, पद, प्रतिष्ठा, मिल जाती है तो हम अहंकार पूर्ण होजाते हैं और सामने वाले व्यक्ति को भूल जाते हैं । निर्दोष भाव से बड़े संतो की, धर्मवंशी आचार्य की आज्ञा का पालन करते रहते हैं, तो निश्चित ही सुख और शांति मिलेगी । विनम्रता के उदाहरण रुप में हमारे संत थे ।

रामप्रतापभाई जो श्रीहरि के सदोहर भ्राता थे । स्वामी ने उन्हें जयश्री स्वामिनारायण ही नहीं लिखा, बल्कि प्रणाम भी लिखा । प्रणाम शब्द नम्रता की परिभाषा है । भक्त भी जब भगवान को साष्टांग प्रणाम करता है तब उसके दंडवत प्रणाम में शरणागति दिखाई देती है, अहंकार वहाँ नष्ट होजाता है । इसी तरह अपने जीवन में होना चाहिए । इस तरह की नम्रता जीवन में दोनो पक्ष को शान्ति प्रदान करती है । आजकल लोग हाथ मिलाते हैं अथवा नमस्कार करते है यह ठीक नहीं । प्रणाम करने में या भगवान के नाम स्मरण पूर्वक अभिवादन करने में रहस्य छिपा हुआ है । किसी को झुककर प्रणाम करने में अपना अहं नष्ट होता है । शब्द द्वारा भी आदर मिलता है । जिस तरह स्वामी ने अपने पत्र में प्रणाम शब्द का उल्लेख किया है, इससे उनकी नम्रता दृष्टि गोचर होती हैं । इसी परिप्रेक्ष्य में गोपालानंद स्वामी अमदावाद मंदिर के आदि महंत सर्वज्ञानंद स्वामी इत्यादि साधुओं को नारायण शब्द का उल्लेख करते हैं । इन शिष्टाचारो से उनकी महानता दृष्टिपथ पर आती है । आज के समाज के लिये उदाहारण रुप है । सभी को यह वात समझनी होगी कि स्वामी ने जैंसा किया वैसा हम क्यों नही करते, यही हमारी संस्कृति है, इसे छोडकर आधुनिक रीति अपनाते जा रहे है, जिसमें वैज्ञानिक ढंग से देखे तो दोष ही दोष है । यदि किसी का रोग होगा तो उसके हाथ मिलाने से हमें भी होने की संभावना रहेगी इत्यादि सभी विचारणीय है ।

श्रीजी प्रसादी के बड़े संतो के प्रसादी के ऐसे पत्रों में जो भी निर्देश है उसे विवेक पूर्वक समझना चाहिये और जीवन में उतारना चाहिये । शुकानंदादि बड़े संतो के हस्ताक्षर का दर्शन भी हमें करना चाहिये, क्योंकि यह बड़े भाग्य से मिलता है जो श्रीहरि के दाहिना हाथ थे, उनके हस्ताक्षर का दर्शन मन को शांति प्रदान करेगा ।

सभी हरिभक्तों के दर्शनार्थ मूल पत्र श्री स्वामिनारायण म्युजियम में रखा गया है । सभी लोग उस पत्र का अवश्य दर्शन करें और प्रसन्न रहे ।

વિશ્વનું સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર-કાલુપુરમાં બિરાજતા શ્રી નરનારાયણદેવના
જીર્ણોદ્ધારિત મંદિર તથા સુવર્ણ સિંહાસનના ઉદ્‌ઘાટન પ્રસંગે

શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ

તા. ૨૪ થી ૨૮ ડિસેમ્બર-૨૦૧૪

અધ્યક્ષશ્રી : પ.પૂ. ધ. ધુ. આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજ

આયોજક

મહંત સ્વામી સ.ગુ. શા. સ્વામી શ્રી હરિકૃષ્ણદાસજી તથા સ્કીમ કમિટી
તથા શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ સમિતિ
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર - કાલુપુર - અમદાવાદ-૧
ફોન. ૦૭૯-૨૨૧૩૨૧૭૦, ૨૨૧૩૬૮૧૮

શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ

તા. ૨૪-૧૨-૨૦૧૪ થી તા. ૨૮-૧૨-૨૦૧૪

સર્વાવતારી ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણ અનંત જીવોનું કલ્યાણ કરવા અનંતમુક્તોને સાથે લઈ મનુષ્યદેવ ધારણ કરી પૃથ્વીલોક પર પધાર્યા. ૪૯ વર્ષ સુધી પોતાની અપાર દયા અને દિવ્ય ઐશ્વર્ય વડે અનંતજીવોને અક્ષરધામના સુખભોગી બનાવ્યા અને એ પરંપરા અવિરત ચાલ્યા કરે એ માટે દેવ, આચાર્ય, સંત અને સત્‌શાસ્ત્રની કલ્યાણકારી પરંપરા પ્રવર્તાવી. શ્રીહરિએ કરેલા અનેક અલૌકિક કાર્યો પૈકીનું શિરમોર કાર્ય એટલે મંદિરોનું નિર્માણ. ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણની આજ્ઞાથી આજથી લગભગ ૧૯૨ વર્ષ પહેલા સ.ગુ. આનંદાનંદ સ્વામીએ ગુજરાતના મુખ્ય નગર અમદાવાદમાં વિશ્વનું સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરનું નિર્માણ કર્યું અને સર્વોપરી શ્રીહરિએ સ્વહસ્તે બાથમાં લઈને સ્વસ્વરૂપ શ્રી નરનારાયદેવ પધરાવ્યા. શ્રી નરનારાયણદેવના ઉંબરા પર ઊભા રહીને "આ નરનારાયણ દેવનું સ્વરૂપ અને અમારા સ્વરૂપમાં લેશમાત્ર ફેર નથી." "જે એમ જાણે જે આ નરનારાયણદેવ અને ભગવાન સ્વામિનારાયણ જુદા છે તેણે અમને ઓળખ્યા જ નથી." "આ નરનારાયદેવની મૂર્તિ સત્સંગી માત્ર એ પૂજામાં રાખવી." આવા મહિમા વચનો સ્વમુખે કહ્યાં એવા મહાપ્રતાપી શ્રી નરનારાયણદેવનું મંદિર સમયના ઘસારે ઘસાતા જીર્ણોદ્ધારની જરૂરિયાત ઉભી થઈ. જે તે સમયે પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી તે સમયના મહંત સ.ગુ. પી.પી. સ્વામીએ કાર્યનો આરંભ કર્યો. ત્યારબાદ પૂ. નિર્ગુણ સ્વામી તથા પૂ.નારાયણસ્વરૂપ સ્વામીએ કાર્યને આગળ ધપાવ્યું. પ.પૂ. ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી વર્તમાન મહંત સ.ગુ. શાસ્ત્રી સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી તથા અમદાવાદ શ્રી નરનારાયણદેવ સ્કીમ કમિટિએ આ જીર્ણોદ્ધારના કાર્યને પુરજોશમાં વેગ આપ્યો જે હવે પૂર્ણતાને આરે છે. સાથો સાથ દેવોના સુવર્ણ સિંહાસન પર જીર્ણ થતા તે સ્થાને નૂતન સુવર્ણ સિંહાસન બનાવવાનો નિર્ધાર કર્યો જે પણ પૂર્ણ થશે. જીર્ણોદ્ધારિત મંદિર તથા નૂતન સિંહાસનના ઉદ્‌ઘાટનના પાવન પ્રસંગે પ.પૂ. ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીની અધ્યક્ષતામાં સૌ સંતો ભક્તોના સાથ સહકારથી ભવ્યાતિભવ્ય "શ્રી નરનારાયદેવ મહોત્સવ" તા. ૨૪-૧૨-૨૦૧૪ થી તા. ૨૮-૧૨-૨૦૧૪ પર્યંત ધામધૂમથી ઉજવવાનું નિર્ધારેલ છે. તો આવો આપણે સૌ સાથે મળી આપણું તન, મન અને ધન શ્રી નરનારાયણદેવના ચરણોમાં સમર્પિત કરી આ ઉત્સવને ઉમંગથી ઉજવીએ.

મહોત્સવ દરમિયાનના આયોજનો

- શ્રીમદ્ સત્સંગીભૂષણ અંતર્ગત શ્રી નરનારાયણદેવ માહાત્મ્ય કથા
- એક દિવસીય શ્રી હરિયાગ (યજ્ઞ)
- 3 દિવસ સમૂહ મહાપૂજા
- મહાઅભિષેક, છપ્પન ભોગ અન્નકૂટ
- શ્રી નરનારાયણદેવની નગર યાત્રા
- પ્રદર્શન
- શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર અખંડ ધુન
- બ્લડ ડોનેશન કેમ્પ
- સર્વ રોગ નિદાન કેમ્પ
- ૧૧૦૦૦ દિવાઓ વડે કાલુપુર મંદિરની સમુહ આરતી
- શ્રી નરનારાયણદેવ બાલમંડળ તથા બાલિકામંડળ દ્વારા સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં ધાર્મિક આયોજનો

- ૨૫૧ ગામડે સત્સંગ સભાઓ
- ૧૫૧ મીનીટની ૨૫૧ ગામડે અખંડધૂન
- ૫૧ કરોડ "શ્રી સ્વામિનારાયણ" મહામંત્ર લેખન
- જનમંગલ - ૧,૨૫,૦૦,૦૦૦, વચનામૃત - ૫૧૦૦, ભક્તચિંતામણી - ૫૧૦૦ પાઠ
- પદયાત્રા દ્વારા કાલુપુર શ્રી નરનારાયણદેવ દર્શન
- ૧૧૦૦૦ શ્રી સ્વામિનારાયણ મેગેઝીન સભ્યપદ ઝુંબેશ

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં સામાજીક આયોજનો

- ૧,૨૫,૦૦૦ વૃક્ષારોપણ
- ૨૧૦૦ બોટલ બ્લડ ડોનેશન તથા સર્વરોગ નિદાન કેમ્પ
- ૧૧૦૦૦ શૈક્ષણિક સાધનોનું વિતરણ (ગામડાઓના બાળમંડળના વિદ્યાર્થીઓને)
- વ્યસન મુક્તિ અભિયાન
- ૧૫૧ અપંગોને ટ્રાઈસિકલ વિતરણ

આપનો સહયોગ

આ મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં આપ આપના પરિવારજનો, મિત્રો સાથે મળી માળા, દંડવત્, પ્રદક્ષિણા, જનમંગલ-વચનામૃત-ભક્તચિંતામણીના પાઠ, મહામંત્રલેખન, પદયાત્રા જેવા નિયમો લઈ અથવા લેવડાવી વિશેષ ભજન કરશો. (જે માટે નોટબુક તથા ફોર્મ આપણા શ્રી સ્વામિનારાયણ મેગેઝીન અથવા તો કાલુપુર મંદિરની ઓફિસમાંથી મળશે.)

આર્થિક રીતે યોગદાન આપી સહભાગી થવા ઇચ્છતા ભક્તો મહોત્સવ દરમિયાન આયોજીત સમુહ મહાપુજા-હરિયાગ તથા અન્ય યજમાન પદનો લાભ લઈ શકશે.

૧૧,૦૦૦/- ૨૧,૦૦૦/-	તા. ૨૫-૧૨-૨૦૧૪ના રોજ સમૂહ મહાપૂજાનો લાભ મળશે. (પ.પૂ. લાલજીમહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૩૧,૦૦૦/- ૫૧,૦૦૦/-	તા. ૨૬-૧૨-૨૦૧૪ના રોજ પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના નિવાસસ્થાને નિત્ય ધર્મકુળ દ્વારા પૂજાતા પ્રસાદીના હરિકૃષ્ણ મહારાજની મહાપૂજા(પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૧,૦૦૦૦૦/- કે તેથી વધુ	તા. ૨૭-૧૨-૨૦૧૪ સર્વાવતારી ભગવાન શ્રીહરિની પૂજામાં રહેલાં અને પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજશ્રી જેની દરરોજ પૂજા કરે છે એવા પ્રસાદીના શાલિગ્રામ ભગવાનની મહાપૂજા (પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૨,૦૦૦૦૦/- કે તેથી વધુ	તા. ૨૭-૧૨-૨૦૧૪ એકદિવસીય શ્રીહરિયાગ (યજ્ઞ)ના પાટલે બેસવાનો લાભ.

આથી વિશેષ સેવા કરીને વિશિષ્ટ યજમાન પદનો લાભ લેવા ઇચ્છતા ભક્તજનોએ કાલુપુર મહંત સ્વામી અથવા આગેવાન સંતોનો સંપર્ક કરવો.

: महामहोत्सव का स्थल
तपोवन सर्कल, मोटेरा गाँव, अहमदाबाद

छठी बाल सत्संग शिबिर

आयोजक : श्री स्वामिनारायण मंदिर तथा समस्त सत्संग समाज

सर्वावतारी इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण की असीम कृपा से श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की प्रेरणा से प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के पावन सानिध्य में तथा स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. सूर्यप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में छठी बाल सत्संग शिबिर का आयोजन बालवा में किया गया था। जिस में कुल सात विभाग करके १५० से भी अधिक गाँवों का संपर्क किया गया था। जिस में फार्म भरना, वेनर लगाना मार्गदर्शन इत्यादि का श्री गणेश किया गया था।

थोड़े समय में गाँव-गाँव से पोस्ट के माध्यम से मनी ओर्डर कुरीयर, इमेल तथा फोन द्वारा शिबिरार्थियों की संख्या लिखाई जारही थी। परंतु जिस दिन शिबिर का उद्घाटन था उस दिन दूसरे अन्य नये गाँव जुड़ गये। जिससे शिबिरार्थियों की कुल संख्या १९५० हो गयी। इतनी संख्या देखकर आयोजक बड़े आश्चर्य में पड़ गये।

सभी बच्चे नास्ता करके टी-शर्ट-केप-किटबेग लेकर सभा में आ गये। इतने में ढोल-नगारे बजने लगे। बालकों के हृदय के सम्राट प.पू. लालजी महाराजश्री संत-पार्षदों के साथ पधारे, दीपक प्रज्वलित करके शिबिर का कार्य आरंभ हुआ। जिस में स.गु. स्वा. हरिकेशवदासजी तथा स्वा. उत्तमप्रियदासजी जुड़े थे।

प्रथम दिन : के प्रखम सेशन का प्रारंभ प्रार्थना से हुआ। सभी बालक अपने स्थान पर खड़े होकर "नमन हुं करुं विश्वपाळने करगरी कहुं भक्तिबालने" शब्द से वातावरण को भक्तिमय कर दिया था। वावोल बालमंडल के बालकों द्वारा स्वागत नृत्य किया गया। सभी शिबिरार्थियों की तरफ से श्री केविन चौधरी (बालवा) द्वारा प.पू. लालजी महाराजश्री का पुष्पहार से स्वागत किया गया था। बाद में मंगल उद्घाटन प्रसंग पर सभी को पेड़ा बांटा गया था। सभी गाँव का सात विभाग में रजिस्ट्रेशन किया गया। गांव के संचालकों द्वारा प.पू. लालजी महाराजश्री का पुष्पहार से सन्मान किया गया था। संतो का पूजन मुख्य दाताने किया।

मंगल उद्बोधन संतोने किया। संतो ने कहा कि जीवन व्यसन रहित होना चाहिये साथ में सत्संग को मुख्य अंग मानना चाहिये। सत्संग ही अपना श्वांस है। इडर वाले पी.पी. स्वामीने प्रथम प्रचन किया। इस प्रसंग पर श्री अमीतभाई चौधरी (संसद सदस्य) का स्वागत किया गया था।

दोपहर भोजन के बाद व्यायाम शिक्षक श्री शैलेषबाई पटेल द्वारा इनडोर गेम कोथड़ा दौड प्रारंभ की गयी। जिस में ९० गांवों ने भाग लिया।

दोपहर ४-०० बजे सभी शिबिरार्थियों के लिये सरदार वल्लभभाई पटेल व्यसन मुक्ति केन्द्र - अमदावाद तथा गुजरात नशाबंदी मंडल अमदावाद के सहयोग से एक भव्य रैली का आयोजन किया गया। बालवा से उनावा पदयात्रा में २००० जितने बालक जुड़े थे। उनावा गाँव के बाहर ही मंदिर के महंत भक्ति किशोरदासजी तथा गाँव के लोगों ने प.पू. लालजी महाराजश्री का पुष्पहार से स्वागत किया था। प.पू. लालजी महाराजश्री मंदिर में पधारकर सर्व प्रथम भगवान की आरती उतारे बाद में प्रासंगिक सभा में पधारे और वहाँ पर उन्हों ने व्यसन रहित होने के साथ सत्संग में सभी को दृढ भाव से रहने के लिये कहा।

रात्रि के कार्यक्रम में अप्पूराजा (कलोल) पधारे थे। इसके अलांवा अन्य गाँवो से सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले पधारे थे सभी ने बालचरित नाटक प्रस्तुत किया। गांधीनगर के हास्य कलाकार श्री ऋषीकेशभाई त्रिवेदी द्वारा जोरदार हास्य प्रस्तुत किये गये। श्री जयदीप तथा हिरेन ने आगे की शिबिर की जानकारी दी।

दूसरे दिन : प्रातः काल कालुपुर मंदिर के सहयोग से मिली हुई पूजा पेटी, कंठी, तिलक-चंदन की डिब्बी, इत्यादि का वितरण किया था। इसके बाद प्रभातफेरी का कार्यक्रम रखा गया था। सभी को पूजा विधिसमझाई गयी थी। इस प्रकार दोनो कार्यक्रम को समझाया गया था। इसके लिये स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा साधु महापुरुषदासजी द्वारा सभी को पुजाविधिकी पुस्तिका भेंट की गयी थी।

दूसरे दिन के प्रथम सेशन में श्री चिंतनबाई कंसारा (विसनगर) ने बालकों के दिन चर्या पर चिन्तन किया था। इस अवसर पर श्री गोरधनभाई सीतापरा हरि प्रागट्य पर अपना विचार प्रस्तुत किया था। इसके बाद हेप्पी लाइफ मेनेजमेन्ट के डाइरेक्टर श्री निलेशभाई पटेल द्वारा जीवन से सम्बन्धित कहानियां प्रस्तुत की गयीं थी। प.पू. लालजी महाराजश्री का प्रवचन अलग से प्रकाशित किया गया है।

इसके बाद के सेशन में माणसा के महंत घनश्याम स्वामीने श्री नरनारायणदेव के ऊपर प्रमाण के साथ प्रवचन किया था। इसके बाद प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञानुसार प्रश्नोत्तरी रखी गयी थी। जिस में प.पू. लालजी महाराजश्री, स्वा. विश्वस्वरुपदासजी, स्वा.

पेईज नं. २२

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

॥ श्री ॥

स्वस्ति श्री अमदावाद एतान श्री वरताल थी लि. साधु गोपालानंद स्वामीना जयश्री स्वामनारायण वांचजो। अपरंच लखवा कारण एम छे जे श्रीजी महाराजे लखावीने एम प्रबन्धकर्यो छे जे देवने अर्थे मानता करे, भेंट मूके के थाल करावे, घोडु-बड़द, गाय, भेंस आदिक जे जे जंगम वस्तु अर्पण करे ते जे देवने अर्थे करे ते देवनुं छे माटे सूरतना सत्संगी अमदावाद आव्या हशे ते मळे नरनारायणदेवने अर्थे पोतपोतानी श्रद्धा प्रमाणे कईंक कर्यु हशे तेनुं नामुं अमने अक्षरानंद स्वामी ए देखाड़्या त्यारे अमे कह्युं जे ए देवने अर्थे वापर्युं ते छो वापर्यु। तेम तमारे कां बोलवुं नहि ते सारु तमारे पण हम जाणवुं पण लक्ष्मीनारायणनी मानतानुं अथवा थाळनुं जे जे होय तेने मांगवुं नहि ने जे आ रीत्यने मागशे ने नरनारायणदेवनुं मागीने लक्ष्मीनारायणदेवने अर्थे करावशे तथा लक्ष्मीनारायणदेवनुं मागीने नरनारायणदेवने अर्थे करावशे तेने देवनो द्रोह थाशे। तेणे करीने तेनुं आ लोक परलोक अवलुंजरुर थाशे। केम जे देव छे ते महाराज पोते पुरुषोत्तम नारायणे बेसाड्या छे ते तेनुं दैवत ए देवमां छे? माटे ए देवनुं ज धार्युं थाशे पण बीजा कोईनुं धार्युं नहि थाय एम सिद्धान्त छे, तत्र श्लोकः ॥

तस्यकश्चितपिसा विद्याया वा न योग वीर्षेण मनीषया वा।

नैवार्थ धर्मैः परतः स्वातो वा कृति विहंतु तनु महिमृयात् ॥१॥

सुज्ञेषु किं बहुना संवत १८८७ ना कारतक वदी-९ लेखक शुकमुनिना साष्टांग प्रणाम सेवा मां अंगीकार करजो।

साधु शिरोमणी साधु ब्रह्मानंद स्वामीने पत्र पोंचे।

स.गु. श्री गोपालानंद स्वामीने, स.गु.श्री ब्रह्मानंद स्वामी के ऊपर लिखवाया था, इस पत्र का सभी को दर्शन हो इस हेतु से श्री स्वामिनारायण म्युजियम के हाल नं. ८ में रखा गया है। सभी हरिभक्त दर्शन का अवश्य लाभ लें।

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।
मोबाईल में टाईप करें : cf 270930 टाईप करें 56789
नम्बर पर : S.M.S. करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : cf टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि मई-२०१४

गत अंक में प.पू. बड़े महाराजश्रीके प्रागट्योत्सव प्रसंग में आई हुई चरण भेट की स्मरणिका	
३,००,०००/-	कच्छ की सभी बहनों द्वारा प.पू. बड़े महाराजश्री के जन्मदोव निमित्त - मांडवी
१,७०,१९०/-	प.पू. बड़े महाराजश्री के जन्मोत्सव के निमित्त मांडवी हरिभक्तों की झोली के निमित-मांडवी।
१,११,१११/-	कांतिलाल नारण केराई तथा नंदु कल्याण केराई वडदिया (वर्तमान नाईरोबी) कृते अरजण रवजी हालाई।
१,११,१११/-	रामजी रवजी हालाई - मांडवी (हा. नाईरोबी) कृते धनबाई सहपरिवार (मांडवी)
७०,०००/-	महेश हरजी प्रागजी वेकरिया (माडंवी)
७०,०००/-	माडंवी श्री स्वामिनारायण मंदिर
७०,०००/-	वशराम मनजी गाजपरीया - वर्तमान धनभाई सपरिवार - मांडवी
११,१११/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुर (कच्छ)
११,०००/-	गोपाल कानजी वरसाणी, सामंत्रा
१०,०००/-	कुंवरजी विश्राम राजपरीया - नागलपुर मांडवी।
१०,०००/-	श्यामुबहन गोविंदभाई गोरसिया - माधापुर (कच्छ)
२१,०००/-	कानजीभाई चतुरदास पटेल (प्रभात पुरा) रमणभाई चतुरदास पटेल रसिकभाई चतुरदास पटेल (प.पू. बड़े महाराजश्री के पदार्पण प्रसंग पर)
२०,०००/-	ठक्कर शांतिलाल नाथालाल कृते कुसुमबहन शांतिलाल ठक्कर घोडासर
१२,७०२/-	अशोकभाई अमृतलाल पटेल (कलोल) कृते जशीबहन अशोकभाई पटेल (प.पू. बड़े महाराजश्री के पदार्पण प्रसंग)
११,००१/-	न्यालकरण चेरीटेबल ट्रस्ट - मुंबई
११,०००/-	जय पटेल कृते जीतुभाई पटेल, नारणपुरा
१०,०००/-	झरणा पटेल कृते कुसुमबहन शांतिलाल ठक्कर - नारणपुरा
७,५००/-	विनोदभाई विहाभाई पटेल - कलोल (प.पू. बड़े महाराजश्री के पदार्पण के प्रसंग पर
६,००१/-	विहान प्रितेश काशव - वैनवी प्रतीश काशव (जन्मदिन निमित्त - ओस्ट्रेलीया (वर्तमान में अमदावाद) कृते पी.पी. स्वामी छोटे)
५,१००/-	सोनी जीतेन्द्रकुमार सी
५,१००/-	घनश्यामभाई दामजीभाई वरु - जीरागढ (राजकोट)
५,१००/-	सद्भावना शैक्षणिक संकुल - हडवद
५,१००/-	तुलसीभाई द्वारकादास पटेल वेलवाडा
५,१००/-	शैलेषभाई मथुरभाई सेटेलाई - प.पू. बड़े महाराजश्री के पदार्पण प्रसंग पर ?
५,१००/-	अ.नि. मणीलाल करशनदास पटेल - नवरंगपुरा कृते सविताबहन मणीलाल।
५,००१/-	एक हरिभक्त नारणपुरा
५,००१/-	जोषी देवांगी, ध्रुवी राकेशकुमार - वायंड
५,०००/-	शशीकांतभाई पटेल - ऊंझा
५,०००/-	कांताबहन नटवरभाई पटेल, विसतपुरा
५,०००/-	वर्षाबहन अश्विनभाई - न्यू राणीप २५ वर्ष विवाह के प्रसंग पर
५,०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर आदरज

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (मई-२०१४)

ता. २९-४-१४	श्री नरनारायणदेव महिला मंडल स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर हवेली - कृते कुसुमबहन (महेसाणा)
ता. ९-५-१४	श्री निरजभाई पीयूषचंद्र जोषी (वडोदरा) श्री धीरजलाल सुरजराम जोषी के जन्म दिन पर।
ता. १३-५-१४	श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज-जयपुर कृते महंत स्वामी श्री देव स्वामी।
ता. २५-५-१४	श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज - एप्रोच-बापूनगर कृते महंत स्वामीश्री लक्ष्मणजीवनदासजी।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

मन से छोटे बनना सीखो

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

हनुमान चालिसा की चौपाई का यह शब्द है ''सूक्ष्मरुप धरि सियहिं दिखावा''।

यह सूक्ष्मरुपधरी क्या है ? रामायण में कथा आती है कि जब हनुमानजी लंका में प्रवेश किये उस समय वे सूक्ष्म रुप धारण किये थे, जिससे उनके ऊपर किसी की नजर न पड़े। सूक्ष्म का मतलब छोटे से छोटा। तुलसीदासजी ने लिखा है कि हनुमानजी जब सीतामाता के पास गये तब वे सूक्ष्म रुपधारण करके गये थे। आपलोग भी जब इष्टदेव के पास जायें अथवा गुरु के पास या अपने पूज्य के पास जांय अथवा माता-पिता के पास जांय तब छोटे बनकर जांय, सौम्य-सरल होकर जांय।

बाहर समाज में, संसार के व्यवहार में चाहे आप जितने बड़े हों लेकिन ऊपर बताये हुए व्यक्ति के पास जांय तो अपने बडप्पन को बाहर रखकर छोटे बनकर भीतर जांये। गोपालानंद स्वामी बडोदरा में थे उस समय की बात है।

एक गरीब घर का बालक जिसका नाम था ''मंगल'' वह मंदिर की, संतो की सेवा करता था। स्वामी को उसकी सेवा अच्छी लगती थी . स्वामी की सेवा का फल उसे मिला जिससे वह पढने में बहुत आगे निकल गया। फिर भी वह मंदिर की तथा संतो की सेवा तो करता ही रहता था। स्वामी उसे प्रेम से मंगल कहकर बुलाते थे। उनके आशीर्वाद से बडौदा के राजा सयाजी राव ने उसे कलेकटर के पद पर नियुक्त कर दिया। उसकी व्यवस्था मान-संमान बढ गया। राजशाही ढाटवाट से रहने लगा, नौकर चाकर अन्य सभी उत्तम व्यवस्था उसे उपलब्धहो गयी।

एकवार कलेक्टर मंगल अपने लावलस्कर के साथ कहीं जा रहा था। उसी समय उसे पता चला कि गुरु गोपालानंद स्वामी वडोदरा में पधारे हुए है। उसके मन में हुआ कि पहले स्वामी का दर्शन करलूं फिर जाऊँ, इस लिये पूरे लाव लस्कर के साथ दर्शन करने गया।

अब यहाँ भूल क्या हुई ! ज्यों कलेक्टर साहब स्वामी के पास गये, स्वामी पहले की तरह वात्सल्यभाव से कहा कि ''आवो मंगल'' ऐसा सुनते ही उसकी शरीर में जैसे आग लग गयी। वह उस समय तो कुछ नही बोला लेकिन मन में विचार करने लगा कि हमारे गुरु बड़े हैं लेकिन विवेक नहीं है। मेरे नौकर चाकर के सामने ''आवो मंगल'' कह दिये।

स्वामी त्रिकाल ज्ञानी थे, वे जान गये। उसके मुख से वह समझ गये। इसे मेरी वात्सलता अच्छी नहीं लगी। कुछ समय बाद कलक्टर साहब से कुछ गल्ती होने के कारण उस पद से निलम्बित कर दिया गया अब वे अपने घर चले गये। अव बे मंगलभाई हो गये। सड़क पर पैदल चलने लगे।

उस समय उसके आंखो में से पानी गिरने लगा। स्वामी की वात याद आने लगी, वे हमें वात्सल्यभाव से मंगल कहकर पुकारे थे तब हमें वह अच्छा नहीं लगा था, आज तो मैं सड़क पर घूम रहा हूँ और लोग हमें मंगलिया कह रहे हैं।

अपने इष्टदेव, गुरु, माता-पिता के पास जांय तो आप क्या हैं यह भूलकर जाइयेगा। उनके यहाँ डॉ., इन्जिनियर, वकील, कलेक्टर, सी.एम., पी.एम., राष्ट्रपति ये सब नहीं चलेगा। उनका स्थान आप के जीवन में क्या है यह याद करके ही उनके पास जाइयेगा।

उनके यहाँ वात्सल्य भरी बाणी सुनने में मिलेगी। जब यह भाव आपके पास रहेगा तभी आपका छोटा रुप अर्थात् सूक्ष्मरुप कहा जायेगा। तभी उनकी कृपा, आशीर्वाद मिलेगा।

प्रिय भक्तों ! हनुमान चालीसा के इस चौपाई से जीवन में कुछ सुधारा हो जाय, और अर्थ घटन हो जाय तो हनुमानजी की तरह भक्ति-शक्ति में नित्य अभिवृद्धि होगी और जिस तरह हनुमानजी सदैव भगवान के कृपापात्र हैं उसी तरह आपके ऊपर अपने बड़ो की कृपा उतरेगी, आशीर्वाद उतरेगा।

इस लिये आप सभी सदा याद रखियेगा कि व्यवहार में आप चाहे जितने बड़े हो गये हों, बड़ा स्थान प्राप्त कर लिये हों लेकिन माता-पिता गुरु के पास तो मन से, स्वभाव से छोटे बनकर रहना सीखे।

•

भाव से भगवान की शरण में जांय

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

भगवान के लीलाचरित्र बहुत कल्याणकारी है। भक्त बहुत सारे संकल्प के साथ भगवान के पास जाते हैं। कोई प्रसाद का संकल्प करता है तो कोई ऐसा कहता है कि भगवान हमें सेवा का अवसर प्रदान करें। कोई ऐसा भी संकल्प करता है कि भगवान हों तो मुझे आठ दिन में अंधा

पेईज नं. २२

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"परमात्मा द्वारा इस संसार की रचना क्यों ?"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

परमात्माने इस सृष्टि की रचना क्योंकी, इसमें कोई सुखी नहीं है। लेकिन ऐसा नहीं है। परमात्मा इस संसार में मनुष्य को दु:खी होने के लिये नहीं बनाया है। परंतु मनुष्य को इस का अनुभव हो कि संसार में प्रभु के चरण के सिवाय अन्यत्र कहीं शास्वत सुख नहीं हैं। परंतु जो लोग इस पृथ्वी पर जन्म लेकर परमात्मा की शरणागति स्वीकार नहीं करते, जिन्हे परमात्मा में श्रद्धा नहीं है, मात्र संसार में आसक्ति है उनके जीवन में दु:ख आता है, उसके बाद उन्हें ऐसा लगता है कि परमात्मा ने इस तरह की मोह माया क्यों बनाई। लेकिन जो सच्चे भक्त हैं उन्हें कभी भी शंका नहीं होती है। परमात्मा की रचना को जो समझ लेते हैं उन्हें तो इस संकार में मोक्ष की अनुभूति होने लगती है। लेकिन ऐसे लोग कम होते हैं। ऐसे लोगों में परमात्मा के प्रति अपार निष्ठा होती है। महाराज के ऊपर कभी शंका नहीं रखनी चाहिये। इस संसार में रहकर ही प्रभु की शरणागति प्राप्त करने पर मोक्षसाध्य हैं। इस संसार में अपने कर्म के प्रभा वसे नरक भी मिलता है। जिस तरह स्कूल में शिक्षक सभी विद्यार्थियों को समान भाव से पढाता है। लेकिन विद्यार्थी के ऊपर होता है कि पूरे वर्ष वह क्या पढा है? पास होना है या न पास होना है। इसी तरह परमात्मा भी सभी को बुद्धि तथा विवेक दिये हैं। परंतु मनुष्य शास्वत सुख को छोडकर नाशवंत सुख के पीछे भागता है। यदि अना सक्त भाव से संसार में रहा जाय तो मोक्ष सरल हो जायेगा। इस संसार में राग द्वेष, ईर्ष्या, आसक्ति, क्रोध, मान, माया, लोभ ये सब बन्धन के कारण हैं। इसी बन्धनके कारण जन्म-मरण होता है, सुख-दु:ख प्राप्त होता है। तब यह ख्याल आयेगा कि इस संसार में किसतरह रहा जाय। इस संसार में जल कमलवत् रहना चाहिये। जल में रहकर भी कमल पानी से निर्लिप्त रहता है। इसीतरह हमें भी संसार में रहते हुये भी संसार में नहीवंत रहना चाहिये। संसार में रहकर सदा आनंद में रहना चाहिये वह मात्र भगवान की भक्ति से संभव है इसके लिये जीवन निर्वाह जितना हो सके उतना ही करना चाहिये। परमात्मा ने जो बुद्धि-विवेक दिया है उसका उपयोग करना चाहिये। संसार का सुख नाशवंत है, संसार माया-मोह-प्रपंच का समुद्र है, आदमी इसी में डूबता उतराता रहता है। पंच विषय में फंसा हुआ आदमी कभी डूबेगा ही ऊबर नहीं सकता। परमात्मा की शरण एकमात्र उबर ने का माध्यम है। सत्संगि जीवन, वचनामृत ए सभी सत् शास्त्र अपने जीवन में उतारने से भी संसार सागर से तरने का रास्ता मिल सकता है। परमात्मा की आज्ञा में रहने से भी जीवन मुक्ति मिल सकती है। जीवन को मात्र वासना पूर्ति के लिये नहीं होना चाहिये।

संपत्ति शरीर की आवश्यकता है। लेकिन उसे बहुत महत्व नहीं देना चाहिये। उत्तम पद का अधिकारी मनुष्य है। परमात्मा की भजन-भक्ति करने का साधन यह शरीर है। लेकिन मनुष्य सुख-सम्पत्ति के पीछे राग-द्वेष-ईर्ष्या में अपना समय बिता देता है।

अज्ञानता के कारण हम जो भी कुछ करते हैं वह ठीक नही ज्ञानपूर्वक कार्य किया जाय तो उसके सभी मार्ग खुल जायेगे। विवेकपूर्वक दृढता के साथ आत्म समर्पण की भावना जिसके जीवन मे हो ही वह निश्चित ही इस संसार सागर से तर जायेगा। माया मोह के बन्धन से दूर हो जायेगा। ध्यान-धारणा-समाधिके माध्यम से भी परमात्मा की तरफ बढा जा सकता है। परमात्मा की शरणागति में शास्वत सुख है परमानन्द की प्राप्ति है। इसलिये संसार के सार-असार को समझकर विवेकी व्यक्ति हंस के नीरक्षीर के विवेक की तरह संसार में रहते हुये भी वह संसार सागर से तर जायेगा।

•

शयन छोडकर भजन करनी चाहिये
- पटेल लाभुबहन मनुबाई (कुंडाल ता. कडी)

"रात रहे पाछळी चार घटिका तैंये,
संत ने शयन तजी भजन करवुं।
स्वामिनारायण नाम उच्चारवुं,
प्रगट परब्रह्मनुं ध्यान करवुं॥

रात रहे पाछली अर्थात् रात्रि पूर्ण होने का समय, रात्रि का अंत, चार घटिका, अर्थात् घडी, १ घडी बराबर २४ मिनट, तो चार घडी अर्थात् ९६ मिनिट सबेरा ६-०० बजे होता है उसके ९६ मिनट अर्थात् ४-०० बजे संतो को उठकर स्वामिनारायण का भजन करना चाहिये। परंतु गढडा मध्य प्रकरण में ११ वें वचनामृतमे श्रीजी महाराज बताते हैं कि "भगवान के भक्त की और जगत के नीव की क्रिया में बहुत अंतर है। यह अंतर क्या है ? इसकी जानकारी हमें गढडा प्रकरण के ५० वें वचनामृत में मिलती है कि "भगवान का भजन करने वाले भक्त तो भगवान के भजन के लिये जगते है और जगत के जीव मे सदैव रात्रिरुपी अंधकार में छैया करते रहते है।"

''जब जगत के जीव सो रहे हों तब भगवान के भक्त को जागना चाहिये और भजन करना चाहिये। उपरोक्त पंक्ति में महाराज मात्र संतो के आज्ञा नहीं कर रहे किन्तु सभी का ध्यान तो महाराज को करना है इस लिये सभी जीवो को ब्रह्ममूहूर्त में शयन का त्याग कर भजन-भक्ति करना चाहिए।

प्रश्न अवश्य होता है कि महाराजने सुबह जल्दी उठकर भजन करने को क्यों कहा ? भजन-भक्ति दिनमें कभी करे तो नहीं चलेगा ? सुबह का ही वक्त क्यों ? हर कार्य सुनिश्चित समयपर सही फल देता है। जिस प्रकार किसान का खेत में बोआई का समय निश्चित होता है तो ही खूब अनाज उगता है। अर्थात् यही कोई भी अनाज दूसरी ऋतु में लगाया जाये तो अधिक मात्रा में नही निकलता। इस प्रकार अपने हेतु को प्राप्त करने के लिये ब्रह्ममुहूर्त में उठकर भजन करना चाहिए।

''भजन तजी ए समे अन्य उद्यम करे,
नारकी थाय ते नर ते नारी।
ते माटे अमूलख अवसर पामी ने,
हरिजन सर्वे लेजो विचारी ॥''

सर्व प्रथम उठ कर मौन ग्रहण करना चाहिए। जितना कम बोलो उतना ही महाराज के अधिक करीब आते है। विज्ञान भी कहता है कि ज्यादा बोलने से शारीरिक उर्जा का व्यय होता है।'' हम अपने नाम, काम, देह, संबंधी, व्यवहार और प्रवृत्ति को सोचते है किंतु भगवान के विषय में नही सोचते। यदि हम सही प्रकार से प्रातः उठ भजन करे तो महाराज सर्वस्व देते हैं।

इस प्रकार सुबह का समय रहता है तब भजन करे, अर्थात् ब्रह्ममुहूर्त में उठकर भजन-भक्ति करने से आध्यात्मिक शांति मिलती है।

अनु. पेईज नं. १७ से आगे

घनश्यामप्रकाशदासजी, स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी प्रश्नोतरी कर रहे थे।

भोजन के बाद रस्सा खींच का कार्यक्रम रखा गया था। बालका की टीम चेम्पियन हुई थी। इसके साथ गोयनका होस्पिटल द्वारा ३० जितने बालकों के दांत की देखभाल विना मूल्य की गयी थी।

दोपहर के बाद सेसन में देव, आचार्य, संत तथा शास्त्र विषय पर चर्चा की गयी जिस में शा. हरिॐप्रकाशदासजी (नारणपुरा)ने भाग लिया था। समापन कार्यक्रम प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों हुआ जिस में उन्हों ने कल कि ''आगामी शिबिर श्रीहरि के जन्म स्थान छपैया में होगी ऐसा कहा। सभी ने ताली बजाकर स्वागत किया था।

इसके बाद शिबिर को सफल बनाने के लिये जिन्हों ने आर्थिक सहयोग किया था उन्हे सन्मानपत्र भेंट किया गया था। संचालकों को गिफ्ट बेग दी गयी थी।

प.पू. लालजी महाराजश्री के रहने की व्यवस्था श्री विष्णुभाई चौधरी ने की थी शिबिर में जेतलपुर, अमदावाद, गांधीनगर, महेसाणा, माणसा, जयपुर, आबू, इडर, वडनगर, सिद्धपुर, उनावा, नारणपुरा, भुज इत्यादि स्थानों से संत पधारे थे। बालवा गाँव के सहयोग से तथा युवानो के सहयोग से यह कार्य क्रम सफल हुआ था। इसका लाइव प्रसारण श्री राजूभाई डी. ने किया था। (www.livevisiter.com) की सेवा की प्रसंशा की गयी थी। शिबिर का संचालन यज्ञप्रकाश स्वामीने किया था।

अनु. पेईज नं. २० से आगे

करके दिखायें। आज यहाँ एक चरित्र का वर्णन कर हे हैं।

एकवार भगवान स्वामिनारायण मेथाण पधारे। उस समय वे उस गाँव के तालाब में स्नान करने पधारे। उस तालाब के भीतर एक टीला है, महाराज तैरते हुए उस टीला के पास गये। वहाँ जाकर अपनी कमर भर पानी में खड़ें हो गये। यह देखकर गाँव के राजपूत मूलभाई केसरिया को हुआ कि महाराज की परीक्षा करनी चाहिये, इस लिये वह तालाब में पानी के भीतर भीतर महाराज के पास गया, एकाएक महाराज का चरण पकडा, उसके मन में ऐसा था कि जब मैं चरण पकडूंगा तो महाराज डरकर जोर-जोर चिल्लायेंगे तब निश्चित हो जायेगा कि ये भगवान नहीं है। लेकिन भगवान घबडाये नहीं और अपने चरण को इस तरह पछाड़े कि वह राजपूत तालाब में से ५० फूट की दूरी पर जाकर गिरा। उस समय उसे यह निश्चय हो गया कि महाराज साक्षात् भगवान हैं।

प्रिय भक्तों ! जिंदगी में घी, तेल, सोना तथा अन्य कोई वस्तु लेते समय उसकी परीक्षा आवश्यक है लेकिन संसारी जीव तो भगवान की ही परीक्षा करने लगता है।

इसके अलावां सुरा बापू की तरह रहना चाहिये -

हुं ने मारो ठाकोर, बीजुं जगत काणुं।
ठाकोर बेठा पारणे, हुं बेठो दोरी ताणुं ॥

ऐसा अनन्य भाव भगवान में रखकर भक्ति-भजन करने से निश्चित ही बेड़ा पार हो जायेगा। इस लिये स्वभाव छोड़कर सद्भाव को स्वीकार करना चाहिये। भगवान भक्तों के भाव के वश में होते हैं।

सत्संग समाचार

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण

परम कृपालु इष्टदेव सर्वोपरि स्वामिनारायण भगवान की अलौकिक कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा आशीर्वाद से तथा अमदावाद कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी शा. हरिकृष्णदासजी की शुभ प्रेरणा से मलाड मुंबई के समस्त महिला मंडल के यजमान पद पर परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण वैशाख शुकल-१ ता. ३०-४-१४ से वैशाख शुक्ल-७ ता. ६-५-१४ तक स्वा. विश्वस्वरुपदासजी के वक्तापद पर हुआ था। संहिता पाठ में स.गु. स्वा. धर्मजीवनदासजी थे।

सभा संचालन शा. नारायणमुनिदासजी गुरु शा. हरिकृष्णदासजीने किया था। शा. स्वामी उत्तमचरणदासजी (भुज-कच्छ)ने भी संचालन किया था। कथा के समय आनेवाले सभी उत्सव धूमधाम से मनाये गये थे। कथा के सात दिन अनेक प्रकार की रसोई दी गयी थी। धर्मकुल की सेवा भी की गयी थी। कथा के समय प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। कथा का श्रवण करके खूब प्रसन्न हुए थे। पूर्णाहुति के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे पारायण के यजमान के ऊपर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू. अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी हवेली में कथा श्रवण करने के लिये आयी थी, यजमान परिवार को आशीर्वाद दी थी। समग्र पारायण के समय स्वामी हरिचरणदासजी, ब्र. राजेश्वरानंदजी, को. जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी, राम स्वामी इत्यादि संतोने खूब सेवा की थी।

(को. शा.स्वा. नारायणमुनिदास)

श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के उपलक्ष्य में जनतानगर चांदखेडा से श्री नरनारायणदेव के दर्शनार्थ पदयात्रा

प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के उपलक्ष्य में ता. २४-५-१४ को जनतानगर चांदखेडा से भाई-बहनोंने अमदावाद से श्री नरनारायणदेव के दर्शनार्थ पदयात्रा का आयोजन किया था। रस्ता में नारायणघाट मंदिर दर्शन किया उस समय पू. पी.पी. स्वामीने सभी पदयात्रियों को पुष्पहार पहनाकर स्वागत किया था। वहाँ से महामंत्र की धुन करते हुये कालुपुर मंदिर श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके पदयात्रि की पूर्णाहुति की गयी थी। पदयात्रा के संयोजक श्री भीखाभाई प्रजापति, श्री पूरव पटेल तथा श्री विष्णुभाई पटेल थे।

(भीखाभाई प्रजापति)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मथुरा महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स.गु. शा. स्वा. अखिलेश्वरदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर का २५ वाँ पाटोत्सव श्री प्रदीपाबहन नारायणभाई पटेल (पीज-अमदावाद) के यजमान पद पर धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग पर होमात्मक महापूजा में २५ हरिभक्तों ने लाभ लिया था। यजमान परिवार की तरफ से ठाकुरजी को अलंकार आभूषण इत्यादि अर्पण किया था। पाटोत्सव के शुभ दिन यजमान द्वारा ठाकुरजी का पूजन-अर्चन के बाद सभा में भुज, प्रयाग, वडताल, बामरोली तथा मथुरा इत्यादि स्थानों से संत पधारे थे। जिस में नारायणमुनिदासजी, अक्षरप्रकाशदास के.पी. स्वामी (मांडवी-कच्छ) मथुरा के महंत स्वामी भूदेवों के साथ रहकर ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक करके आरती किये थे। सभी के लिये प्रसाद की व्यवस्था की गयी थी।

प्रसंग की व्यवस्था में को. सर्वेश्वरदासजी, पुजारी विश्वेश्वरदास, गिरनारी स्वामी, बामरोली के महंत स्वामी, आत्माराम भगत, पा. बाबु भगत (अमदावाद) इत्यादि संत कार्यक्रम में लगे थे।

शा. स्वा. अक्षरप्रकाशदासजी (माडंवी) तथा महंत स्वामी ने प्रसंगोचित उद्बोधन किया था। यजमान परिवार को प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा से श्रीजी महाराज की मूर्ति भेंट देकर प्रसन्न किये थे।

(को. सर्वेश्वरदासजी)

विहार गाँव में श्रीमद् भागवत पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्रीहरि के चरणो से पावन भूमि विहार गाँव में ता. ९-५-१४ से ता. १२-५-१४ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण धूमधाम से संपन्न हुआ था।

यहाँ के प.भ. केशवलाल विठ्ठलदास पटेल तथा अ.सौ. रईबहन केशवलाल पटेल की दैनिक चर्या के निमित्त चि. राजेशभाई अमृतभाई तथा भरतभाई ने श्रीमद् भागवत पारायण का आयोजन किया था। कथा प्रसंग में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, श्री रुक्मणी विवाह में वरपक्ष की बारात कुकरवाडा गाँव से आयी थी। धूमधाम से विवाह संपन्न हुआ था।

अंतिम दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर भाइयों के तथा बहनो क मंदिर में आरती उतारकर यजमान के घर पधारे थे। बाद में सभा में पधारकर कथा की पूर्णाहुति किये थे। साथ में यजमान परिवार भी संयुक्त हुआ था।

प्रासंगिक सभा में कालुपुर मंदिर से पधारे हुए पू. महंत स्वामी, देव स्वामी, ब्र. राजु स्वामी, सत्यसंकल्प स्वामी इत्यादि संतो की अमृतवाणी के बाद प.भ. केशवलाल दादा का सन्मान किया गया था। इस प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजन किया गया था। इस उत्सव में उत्तम सेवा की गयी थी। नीलकंठ स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामी तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने सुंदर सेवा की थी। सभा संचालन पी.पी. स्वामीने किया था।

(समस्त गाटुडिया रिवार विहार)

श्री स्वामिनारायण मंदिर साबरमती (रामनगर) १४ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर साबरमती का १४ वाँ पाटोत्सव ता. ९-५-१४ को विधिपूर्वक संपन्न किया गया था।

पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. रमेशभाई अंबालाल पटेल थे। प्रातः ठाकुरजी के अभिषेक तथा अन्नकूट का दर्शन करके सभी लोग धन्यता का अनुभव कर रहे थे। प्रासंगिक सभा में शा.स्वा. रामदास, शा. अभय स्वामी, हरिजीवन स्वामी, बलदेव स्वामी की प्रेरक वाणी तथा कीर्तन से सभी को सुख मिला था। सभा में श्री नरनारायणदेव के महोत्सव की रुपरेखा बताई गयी थी। साबरमती विस्तार के हरिभक्तों का दान-भेंट उत्तरोत्तर बढता जा रहा है, धन्य हैं ऐसे हरिभक्त।

(शा. चैतन्यस्वरुपदास, कोटेश्वर)

गवाडा गाँव में भव्य पदयात्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा संतो की प्रेरणा से श्रीहरि के चरणो से पावन प्रसादीभूत गवाडा गाँव से जेतलपुरधाम तक दि. २५-४-१४ से दि. २८-४-१४ तक नरनारायण महोत्सव के उपलक्ष्य में पदयात्रा नीकाली थी। दि. २५-४-१४ को शाम को ५-०० बजे कोटेश्वर से शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी तथा

दिव्यप्रकाश स्वामीने ठाकुरजी की आरती उतारकर आशीर्वाद देकर पदयात्रा का प्रारंभ करवाया था । समग्र पदयात्रा में गावके तथा शहर के सभी भक्त उत्साहपूर्वक जुडे थे । दि. २८-४-१४ को पदयात्रा का संघ जेतलपुर पहुंचा था और श्री रेवती बलदेवजी, हरिकृष्ण महाराज के दर्शन कर पदयात्रा पूर्ण की थी । (नारायणबाई पटेल, गवाडा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमनगर (भक्तिनगर) का १५ वां उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा संतो की प्रेरणा व मार्गदर्शन से मेमनगर मंदिर का १५ वाँ वार्षिक स्थापना उत्सव २२-५-१४ को लालजी महाराजश्री के उपस्थिति में धामधूम से मनाया गया ।

इस उत्सव के यमजान प.भ. जयंतीलाल छनगलाल पटेल, हरिभक्त संजयकुमार सौरभकुमार के परिवार ने लाभ लिया था । प्रात: संध्या को ठाकुरजी का पूजन किया था । पश्चात लालजी महाराज का आगमन हुआ और उनके कर कमलो से अभिषेक की आरती हुई थी ।

प्रासंगिक सभा में पू. महंत स्वामी, छपैया स्वामी, शा. चैतन्य स्वामी, आनंद स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामी की प्रेरकवाणी के पश्चात् यजमानश्री तथा मेहमान का फूलहार से स्वागत किया था । पश्चात् अन्नकूट की आरती हुई थी । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने सुंदर सेवा की थी । (समस्त सत्संग समाज, भक्तिनगर, मेमनगर)

दियोदर गाँव बनासकांठा में श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद तथा पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से बनासकांठा के दियोदर गाँव में २५-४-१४ को श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में रात को ९-०० से १२-०० तक सत्संग सभा का आयोजन हुआ था । जिस में नारायणघाट से शा. पी.पी. स्वामी, राम स्वामी, शा. छपैयाप्रसादजी तथा मुनि स्वामी आदि संतोने कथावार्ता का लाभ लिया था । उस सभा में डीसा, पालनपुर से भक्त लाभ लेने के लिये पधारे थे । (दिलीपभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर इटादरा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से ईटादरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २७-४-१४ को रात में ८-३० से ११-०० बजे तक श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में नारणघाट से शा. पी.पी. स्वामी, शा. राम स्वामी तथा प.भ. महेन्द्रभाई (हिरावाडी) तथा यासीनभाई (माणसा) आदि संतो-हरिभक्तोने कथा-वार्ता कीर्तन भक्ति करके हरिभक्तों को सत्संग का सुंदर लाभ दिया । (कोठारी ईटादरा)

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में सत्संग सभा पदयात्रा का आयोजन एप्रोच श्री स्वामिनारायण मंदिर से

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से तथा एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरमा से श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव, एप्रोच मंदिर शताब्दी महोत्सव को हर्षद कोलोनी मंदिर के पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. २-५-१४ को रात्री सत्संग सभा, तथा एप्रोच मंदिर से श्री स्वामिनारायण म्युजियम तक पदयात्रा का आयोजन किया गया । सत्संग सभा में गायक कथाकार श्री पूरव पटेल तथा मयंक मोदीने नंद संतो द्वारा रचित सुंदर राग में कीर्तनो का गान किया । एप्रोच मंदिर, कोटेश्वर गुरुकुल संतो तथा कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामीने सत्संग पोषक प्रवचन किया । शा. पी.पी. स्वामी (नारणघाट महंतश्री) ने सभा संचालन किया था ।

पदयात्रा में एप्रोच मंदिर के दो संतो के साथ कुल ३०० भक्तों ने महामंत्र धून, करते हुए नारणघाट मंदिर, नवा वाडज मंदिर, नारणपुरा मंदिर दर्शन करके श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दर्शन किया । प.पू. बड़े महाराजश्रीने प्रत्येक पदयात्री को आशीर्वाद दिया ।

(गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सायरा प्रथम पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर सायरा का प्रथम वार्षिक पाटोत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से मनाया गया । स.गु. महंत शा. स्वा. अखिलेश्वरदासजी (मथुरा) की प्रेरणा मार्गदर्शन से प.भ. विनुभाई रेवाभाई पटेल दिपेन्सभाई विनुभाई तथा अ.नि. माधुभाई कोह्याभाई पटेल हा. विजयबाई माधुबाई पटेल यजमानपद पर थे । उनकी तरफ से ठाकुरजी का महाभिषेक, अन्नकूट तथा समग्र गाँव को प्रसाद खिलाया गया । प.पू. लालजी महाराजश्री का आगमन होते ही मंदिर में ठाकुरजी की अन्नकूट की आरती की गयी । सभा में कोटेश्वर के शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी तथा शा. दिव्यप्रकाशदासजीने कथा का सुंदर लाभ दिया । स्वा. हरिजीवनदासजी तथा मथुराके महंत स्वामी के प्रेरणात्मक उद्बोधन के बाद प.पू. लालजी महाराजश्री का समग्र गाँव की तरफ से कोठारी रमणभाईने पुष्पहार पहनाकर पूजन किया समग्र प्रसंग में पुजारी विश्वेश्वरदास तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर सेवा की । प.पू. लालजी महाराजश्री की सेवा जशुभाई (माधापर)ने की । तथा सायरा, धनसुरा, बायड, मोडासा, रडोदरा, आकरुंद तथा डेमाई के भक्तोंने सेवा की । प्रत्येक मंदिर के कोठारीश्री तथा यजमानश्रीओने तथा जल सेवा करनेवाले प.भ. जिज्ञेशभाई एन. पटेल (मोडासा) आदि ने प.पू. लालजी महाराजश्री को हार पहनाया । मथुरा महंत स्वामीने आभार विधिकी । अंत में प.पू. लालजी महाजाश्रीने दिव्य आशीर्वाद दिये ।

(साधु आनंदस्वरुपदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार का ९वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार में ९ वाँ पाटोत्सव मनाया गया । पाटोत्सव के यजमान पद पर स.गु. महंत शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी की प्रेरणा से प.भ. जितेन्द्रभाई पटेल के परिवारने शोभा बढाई थी ।

वैशाख शुक्लपक्ष-१५ को ठाकुरजी के शोडशोपचार अभिषेक-महापूजा आरती की गयी । समग्र प्रसंग में श्रीजी स्वामी, मुक्तराज स्वामी, विश्वेश्वर स्वामी, हार्दिक भगत तथा हरिद्वार मंदिर के मेनेजर श्री कौशिक पटेल तथा निकुंजभाई आदिने सुंदर व्यवस्था की ।

(हार्दिक भगत)

मांडल गाँव में महिला सत्संग शिबिर का आयोजन

श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के उपलक्ष में श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल द्वारा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के शुभ सानिध्य में ता. १६-४-१४ को भव्य सत्संग महिला शिबिर का सुंदर आयोजन किया गया । जिस में धामो-धाम की सांख्ययोगी बहनोने कथा-वार्ता का लाभ दिया । अंत में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने अपने आशीर्वाद प्रवचन में मूर्ति पूजा के विषय में विस्तृत जानकारी दी । शिबिर में पाटडी के शां. शांताबाई, रंजनबाई, हंसाबाई तथा कालीयाणा के बबुजने अच्छी सेवा की । विरमगाँव, जेतलपुर, विसनगर, सुरेन्द्रनगर आदि धामो से सांख्ययोगी बहने पधारी थी । समग्र शिबिर मेंम ोरी पथुभाई, राधाबहन, दक्षाबहन, मनीषाबहन तथा सोनलबहन आदिने यजमान पद का लाभ लिया ।

मांडल मंदिर का १०२ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर का १०२ वाँ पाटोत्सव ता. ९-४-१४ को मनाया गया ।

इस प्रसंग पर पू. शा.स्वा. आत्मप्रकासदासजी (जेतलपुर) महंतश्री वी.पी. स्वामी (कलोल) तथा जेतलपुर के ठाकुरजी के पूजारी ब्र. पूर्णानंदजीने अभिषेक करके आरती की । संतो ने हरिभक्तों को कथा-वार्ता का लाभ दिया । पाटोत्सव के यजमान प.भ. भगवानदास अंबारामभाई थे । (मुकेशभाई पटेल कोठारी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टांकिया सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर टांकीया में ता. २६-४-१४ को श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष में सत्संग सभा का आयोजन किया गया । जिस में शा. माधव स्वामी तथा पार्षद जसु भगतने कथावार्ता का लाभ दिया । टांकीया, वडु तथा करजीसण के हरिभक्तों ने लाभ लिया । सभा के यजमान श्री खुमानसिंह तथा वजेसिंह चौहाण थे । (कोठारी महेन्द्रसिंह)

४२ वें प्रागट्योत्सव अंतर्गत धमासणा गाँव में २४ घंटे की अखंड धून तथा श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के उपलक्ष में महापूजा का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आगामी ४२ वे प्रागट्योत्सव के उपलक्ष में धमासणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में हरिभक्तोंने साथ मिलकर अखंड २४ घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की । श्री नरनारायणदेव महा महोत्सव के उपलक्ष में समूह महापूजा शा. स्वा. अभयप्रकाशदासजी (नारणघाट) ने करवाई । जिस में कई हरिभक्तोंने लाभ लिया । (कोठारी पोपटभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद-कोलोनी चतुर्थ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा प.भ. दासभाई (ट्रस्टीश्री) तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के आयोजन से हर्षद कोलोनी श्री स्वामिनारायण मंदिर का ४ था पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग के उपलक्ष में ता. ११-५-१४ से ता. १७-५-१४ तक पू. स.गु. शा.स्वा. निर्गुणदासजी के वक्तापद पर श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण का हजारो श्रोताभक्तोंने लाभ लिया ।

कथा में कई उत्सव मनाये गये । श्री जयेशभाई सोनी (कीर्तनकार)ने सुमधुर कंठ से कीर्तन भक्ति का लाभ दिया । कथा में एप्रोच मंदिर के संत तथा धारासभ्यश्री वल्लभभाई काकडीया भी कथा-श्रवण करने पधारे थे ।

१५० भक्तोंने महापूजा में लाभ लिया था . प.पू. लालजी महाजाश्रीने पधारकर आशीर्वाद दिये ।

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप बड़ी गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्रीने पधराकर बहनों को दर्शन आशीर्वाद का लाभ दिया । ठाकुरजी को अन्नकूट का भोग लगाया गया । पारायण के यजमान प.भ. नरसिंहभाई नारणबाई भंडेरी आदि कई भक्तोंने छोटी-बड़ी सेवा की थी । (गोरधनभाई सीतापरा)

आणंदपुरा (कडी) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्णकृपा से तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा सां. कमलाबाई की प्रेरणा से समस्त महिला मंडल की तरफ से आनंदपुरा गाँव में पाटोत्सव के उपलक्ष में ता. ५-५-१४ से ता. ९-५-१४ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण सां. कोकीलाबाई के वक्तापद हुई ।

ता. ९-५-१४ को प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारी थी । तथा ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारकर अलौकिक लाभ देकर पुर्णाहुति की आरती की । इस प्रसंग पर सांख्ययोगी बहने पधारी थी । सभा संचालन सां. उषाबाई ने किया । पाटोत्सव का दर्शन, कथाश्रवण बहनोने किया । (ज्योत्सनाबहन पटेल)

शाहीबाग विस्तार में श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में सत्संग सभा का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा नारणघाट मंदिर के संत शा.स्वा. रामकृष्णदासजी, स्वामी बालस्वरुपदासजी आदि संत मंडल ता. ९-५-१४ शनिवार को रात में ९ से ११ तक शाहीबाग में आगामी श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के उपलक्ष में महामंत्र, धून, कीर्तन, भक्ति कथावार्ता का सुंदर लाभ दिया । सत्संग सभा के यजमान प.भ. बाबुभाई सांकलचंद पटेल (विहार) थे । श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर व्यवस्था की थी ।

(सुधीरभाई चोक्सी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वाली (राज.) द्वारा आयोजित सत्संग उत्कर्ष महोत्सव तथा त्रिदिनात्मक पुरुषोत्तम प्रकाश पारायण

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से मारवाड प्रदेश के श्री स्वामिनारायण मंदिर वाली में सत्संग उत्कर्ष महोत्सव एवं त्रिदिनात्मक श्री पुरुषोत्तमप्रकाश ग्रंथ पारायण का सुंदर आयोजन किया गया । कथा के वक्ताद पर संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकाल पू. स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) विराजमान थे । इस प्रसंग पर ता. १२-५-१४ को प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे तब वाली तथा आसपास के गाँवो के भक्तोंने स्वागत किया ।

ता. १३-५-१४ को कथा के दूसरे दिन भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री तथा पू. श्री राजा पधारी थी । भव्य सुशोभित शोभायात्रा में बिराजमान होकर प.पू. लालजी महाराजश्री ने समग्र मारवाड के शिरमोर सत्संग को दर्शन देते हुए आशीर्वाद दिये । बहनोके लिए प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारकर दर्शन आशीर्वाद दिये ।

ता. १४-५-१४ को पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आगमन होते ही वाली के संतो हरभक्तोंने खुशी व्यक्त की । प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से श्री राधाकृष्ण - हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक वेदविधिपूर्वक संपन्न हुआ । उसके बाद ठाकुरजी की अन्नकूट की आरती हुई । वाली के पास मेड़ा तथा वमा के गाँव के मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने मूर्ति प्रतिष्ठा करके आरती की । कथा की पूर्णाहुति की आरती की । और भगवान की भक्ति निष्काम भाव से ही करनी चाहिए इस महोत्सव पर अमदावाद, वडताल, जेतलपुर, सिध्धपुर, महेसाणा तथा इडर से संतगण पधारे थे ।

समग्र महोत्सव में महंत स्वामी देवप्रसाददासजी, कोठारी स्वामी हरिप्रसाददासजी तथा श्री धर्मकुल आश्रित श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल वाली (राज. वर्तमान में मुंबई) के सभी हरिभक्तोंने प्रेरणात्मक सेवा की । समग्र प्रसंग में सभा संचालन शा.स्वा. चंद्रप्रकाशदासजी (सिध्धपुर) तथा शा.स्वा. विजयप्रकाशदाजी (वाली)ने किया । (किशनभाई माली, प्रमुखश्री नरनारयणदेव युवक मंडल, मुंबई)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) रामपरा में प्रथम पाटोत्सव

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु.

आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वादि से तथा सां. कमलाबहन की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) रामपुरा का प्रथण पाटोत्सव ता. २२-४-१४ को विधिपूर्वक मनाया गया । इस प्रसंग पर आयोजित समूह महापूजा में १२५ बहनोने लाभ लिया । प्रातः श्री बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज का षोडशोपचार अभिषेक तथा अन्नकूट आरती की गयी । आयोजित सभा में शाव्हिराबाई, सां. कोकीलाबाई, उषाबाई, गोपीबाई, ललीताबाई आदिने कथा का लाभ लिया । रात्रि में नंद संतो द्वारा रचित रासगरबा धूमधाम से मनाया गया । (कोठारीश्री रामपरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वांकानेर में पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के आशीर्वाद से तथा सां. कमलाबाई की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर वांकानेर का दूसरा पोटात्सव ता. १४-४-१४ को मनाया गया था ।

इस प्रसंग पर ता. ८-४-१४ से ता. १०-४-१४ तक प्रसंग में सत्संग सभा का आयोजन किया गया । जिस में सां. कोकीलाबाई, उषाबाई, जयाबाई, विज्याबाईने कथा का लाभ दिया । ता. १०-४-१४ को ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक तथा महापूजा की यी । जिस मं १५० बहनोंने लाभ लिया । सभा संचालन सां. विज्याबहनने किया था ।

(सां. जयाबहन वांकानेर)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से १२ अप्रिल साम को मंदिर के संतो की शुभ उपस्थिति में श्री स्वामिनारायण भगवान का प्रागट्योत्सव मनाया गया । श्री स्वामिनारायण भगवान के सिंहासन को सुंदरता से सजाया गया । महंत स्वामी विश्ववल्लभदास तथा श्रीजी स्वामीने सभा में सर्वोपरि भगवान श्रीहरि का माहात्म्य कीर्तन भक्ति आदि कार्यक्रम किये । यजमानों का फूलहार से सन्मान किया गया । (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर इकंटकी लुईस विले

श्री नरनारायणदेव श्री स्वामिनारायण मंदिर लुईसविले कंटकी में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी तथा शा. हरिनंदन स्वामी की प्रेरणा से एप्रिल के पहेले विकेन्ड शनिवार साम को रामनवमी । श्रीहरि प्राकट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया । धून-भजन-कीर्तन का कार्यक्रम किया गया । कुछ ही समय में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अपने वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा करेंगे । यजमानो का पुष्पहार पहनाकर सन्मान किया गया । विनुभाई पटेलने मूर्ति प्रतिष्ठा की जानकारी दी । (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया में प.पू. बड़े महाराजश्री का प्राकट्योत्सव मनाया गया

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया में पपू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी नरनारायणदासजी की प्रेरणा से सभी हरिभक्तों ने मिलकर प.पू. बड़े महाराजश्री का ७० वाँ प्रागट्योत्सव मनाया । महंत स्वामीने धर्मकुल का माहात्म्य कहा । प.पू. बड़े महाराजश्री द्वारा किये गये शैक्षणिक संस्थाओ, अस्पताल, देश-परदेश के मंदिर निर्माण आदि कार्यो की स्मृति करवाई । युवा-बाल हरिभक्तों ने सुंदर केक बनाकर प.पू. बड़े महाराजश्री का जयजयकार करके जन्म दिन मनाया । यजमान परिवार तथा संत-हरिभक्तोंने प.पू. बड़े महाराजश्री की तस्वीर का पूजन करके ठाकुरजी की आरती की । (प्रवीणभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीड्नी ओस्ट्रेलीया

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीड्नी में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से १९ से २१ एप्रिल-२०१४ को श्री स्वामिनारायण मंदिर सीड्नी में बिराजमान ठाकुरजी का ९ वाँ पाटोत्सव मनाया गया । इस प्रसंग पर अमदावाद कालुपुर मंदिर संप्रदाय के सुप्रसिद्ध विद्वान कथाकार पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी, स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी (मूली), तथा स्वा. हरिकृष्णदासजी (एप्रोच बापुनगर) आदि संतगण पधारे थे । प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगिभूषण की त्रिदिनात्मक कथा पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । कीर्तनकार विनोदभाई पटेलने भक्ति कीर्तन का गान किया । प्रश्नोतरी में बच्चोने उत्साहपूर्वक भाग लिया । ता. २१-४-१४ को संतो द्वारा सर्वोपरि श्रीहरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार अभिषेक अन्नकूट आरती की गयी । इस प्रसंग पर डॉ. ली. एन.पी. हरिभक्तों के आमंत्रण से पधारी थी ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल सीडनी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर इलेस्टर (यु.के.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद इलेस्टर मंदिर में ता. ९-४-१४ चैत्र शुक्ल पक्ष-९ को श्रीहरि प्राकट्योत्सव रामनवमी सुबह को १० से १२ तक मनाया गया । साम को सभा में हरिभक्तों द्वारा कीर्तन भक्ति कथा तथा प्रागट्योत्सव आरती, रास-गरबा का आयोजन किया गया । सुंदर केक काटकर यजमान परिवार तथा हरिभक्तोंने साथ मिलकर प्रागट्योत्सव मनाया । यजमान पद पर श्री ललीतभाई जगड़ा, श्री नयनाबहन रामलाणी परिवार थे । श्री कार्तिकभाई महेन्द्रभाई पटेल तथा हरिभक्तोंने सुदंर सेवा की । पूजारी भूपेनभाई तता कमलेशभाई ने भी सेवा की ।

(किरण भावसार - सहमंत्री लेस्टर)

श्री कच्छ सत्संग स्वामिनारायण नाईरोबी सहजानंद षष्टि पूर्ति का महोत्सव

भूज श्री स्वामिनारायण मंदिर के अ.नि. स.गु. महंत स्वामी श्री वल्लभदासजी तथा अ.नि. महंत स.गु. शा.स्वा. धर्मजीवनदासजी के मार्गदर्शन प्रेरणा आशीर्वाद से केनीया के पाटनगर नाईरोबी शहर में किरिलागा रोड पर इ.स. १९५४ में शरद पूनम के शुभ दिन पर श्री क.स. स्वा. मंदिर की स्थापना की गयी । जिस के ६० वर्ष पूर्ण होने पर ६-१०-२०१४ से ता. १२-१०-२०१४ तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा भूज मंदिर के पू. महंत स्वामी की शुभ उपस्थिति में धूमधाम से मनाया जायेगा । ता. ५-१०-१४ को प.पू. आचार्य महाराजश्री की सोभायात्रा-पोथीयात्रा नीकाली जायेगी । इस महोत्सव में प.पू. आचार्य महाराजश्री के दर्शन, संतो का दर्शन तथा कथा श्रवण करने हेतु हार्दिक आमंत्रण है ।

रोज कथा-पारायण, रासोत्सव, महिला मंच, बाल मंच, भवन संध्या आदि का कार्यक्रम किये जायेंगे ।(मंत्रीश्री नारणभाई गोरसीआ)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर भात में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. महाराजश्री तथा सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री । (२) साबरमती श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन । (३) मेमनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन । (४) वडनगर मंदिर में विराजमान सर्वोपरि श्रीहरि शताब्दी महोत्सव प्रसंग पर दीप प्रज्वलित करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री तथा महंत शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी को आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री तथा यजमान परिवार को आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री । (५) श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के उपलक्ष्यमें अधोनिर्दिष्ट गाँवो में सम्पन्न पारायण तथा सत्संग सभा - विहार, घाटलोडीया, सूरज, महादेवनगर, हर्षद कोलोनी, बापूनगर, घमासणा ।

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर - वाली (राजस्थान) में सत्संग उत्कर्ष महोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए तथा सभा में आशीर्वाद देते हुए साथ में गुरु मंत्र देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा समस्त सत्संग को आशीर्वाद देते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री एवं शोभायात्रा तथा सभा में दर्शन देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।(२) बालवा सत्संग शिबिर प्रसंग पर उनावा मंदिर में सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री तथा बालवा सत्संग शिबिर प्रसंग पर दीप प्रज्वलित करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री तथा बालवा में व्यसन मुक्ति रैली में प्रोत्साहित करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

Jagadish Offset
Praful Kharsani